परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सांविधिक तथा स्वायत्त निकायों के निष्पादन की समीक्षा

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणीय 34 स्वायत्त / सांविधिक निकाय हैं। इन 34 संगठनों में से देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड. सी. सी.) हैं। ये स्वायत्त / सांविधिक निकाय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, नामत: संग्रहालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, मानव विज्ञान, निष्पादन कला, प्लास्टिक तथा साहित्यिक कलाएं, बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन, अभिलेखीय पुस्तकालय स्मारक आदि। विगत दो वर्षों अर्थात 2012-13 और 2013-14 के लिए इन संस्थानों के निष्पादन की समीक्षा करने पर यह पाया गया है उनके उद्देश्यों को देखते हुए उनका कार्य निष्पादन सामान्यत: उच्च स्तरीय रहा है।

कला और संस्कृति का संवर्धन और प्रचार - प्रसार

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेड. सी. सी.)

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के सृजनात्मक विकास में कार्यरत हैं। संस्कृति मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों में सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र हैं (1) पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (ई. जेड. सी. सी.), कोलकाता (2) उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (एन. सी. जेड. सी. सी.), इलाहाबाद (3) पूर्वोत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (एन. ई. जेड. सी. सी.), दीमापुर (4) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (एन. जेड. सी. सी.), पटियाला (5) दक्षिण मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (एस. सी. जेड. सी. सी.), नागपुर (6) दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (एस. जेड. सी. सी.), तंजावुर तथा (7) पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (डब्ल्यू. जेड. सी. सी.), उदयपुर। इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों का आवश्यक बल लोगों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने और विभिन्न राज्यों के ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों में लुप्त हो रहे कलारूपों / परम्पराओं का पता लगाने, सम्पोषण करने तथा संवर्धन करने पर रहा है।

कार्यक्रम शुरू करने के लिए आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से मंत्रालय ने प्रत्येक जेड. सी. सी. को उसकी प्रारंभिक संग्रहित अक्षय निधि के रूप में 5 करोड़ रूपए प्रदान किए थे। 10वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान प्रत्येक जेड. सी. सी. के लिए 5 करोड़ रूपए की अतिरिक्त निधि दी गई है। मंत्रालय राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान - प्रदान कार्यक्रम, गुरू - शिष्य परंपरा, रंगमंच सुदृढ़ीकरण, लुप्त हो रहे कलारूपों के

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

प्रलेखन, शिल्पग्रामों की स्थापना, प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव (लोक तरंग) तथा गणतंत्र दिवस शिल्प मेला जैसी स्कीमों को कार्यान्वित करने के लिए सीधे भी निधियां जारी करता है। जेड. सी. सी. ने संगीत नाटक अकादेमी के साथ मिलकर पहली बार मार्च 2006 में "ऑक्टेव" नामक पूर्वोत्तर उत्सव आयोजित किया जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र से सैकड़ों कलाकार दिल्ली आए और उन्होंन ऑक्टेव में भाग लिया। 2012 - 13 के दौरान, "ऑक्टेव" पूर्वोत्तर उत्सव के तहत, सदस्य राज्यों में 29 कार्यक्रम आयोजित किए गए थे जिसमें काफी संख्या में कलाकारों ने भाग लिया। जेड. सी. सी. राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान - प्रदान कार्यक्रम के तहत आयोजित मेलों, उत्सवों और सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न बडी़ संख्या में कलाकारों के अनुरूप 518 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिससे देश की सांस्कृतिक विविधता का प्रसार हुआ। इसके अलावा 254 शिष्यों के साथ विभिन्न कला स्वरूपों से लगभग 111 गुरू - जेड. सी. सी. से लाभान्वित हुए। 2013 - 14 के दौरान जेड. सी. सी. ने सदस्य राज्यों में पूर्वोत्तर उत्सव 'ऑक्टेव' आयोजित किए है। अब तक आयोजित किए गए 579 कार्यक्रमों से जेड. सी. सी. के राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान - प्रदान कार्यक्रम के तहत बडी़ संख्या में कलाकार लाभान्वित हुए हैं। जेड. सी. सी. की गुरू शिष्य परम्परा योजना के तहत लगभग 69 गुरू और 468 शिष्य लाभान्वित हो चुके हैं। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान जेड. सी. सी. का कार्यनिष्पादन काफी प्रभावोत्पादक रहा है। मंत्रालय द्वारा समय - समय पर सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के कार्यकलापों की बारीकी से मानीटरिंग एवं समीक्षा की जाती है। जेड. सी. सी. द्वारा शुरू किए गए इन कार्यक्रमों को आम जनता और विशेषत: संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के कलाकार समुदायों में बहुत प्रभावी पाया गया है।

<u>सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी. सी. आर. टी.)</u>

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी. सी. आर. टी.) संस्कृति मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना 1979 में की गई थी। सी. सी. आर. टी. का मुख्य जोर देश भर में सेवाकालीन शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों तथा विद्यार्थियों के लिए विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके विद्यार्थियों को सभी विकास कार्यक्रमों में संस्कृति के महत्व के बारे में जागरूक बनाने पर रहता हैं। वर्ष 2012 - 13 के दौरान पूरे देश में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 6115 अध्यापकों / शिक्षा प्रदाताओं को प्रशिक्षित किया गया। देश के विभिन्न राज्यों में 90 सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की गई, 58004 विद्यार्थियों को सेवा एवं सामुदायिक फीडबैक कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षित किया गया। समीक्षाधीन अवधि में भारतीय कला और संस्कृति पर 50 व्याख्यान आयोजित किए गए। सी. डी. रोम्स सहित 4 विडियों फिल्में भी तैयार की गई तथा पुनर्मुद्रण सहित 4 प्रकाशन जारी किए गए। 2013 - 14 के दौरान लगभग 6419 शिक्षकों/ शिक्षा प्रदाताओं को विभिन्न

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षकों के माध्यम से 5716 शिक्षकों को भी प्रशिक्षित कराया गया। सेवा एवं सामुदायिक फीडबैक कार्यक्रम के तहत सी. सी. आर. टी. ने भारतीय कला एवं संस्कृति क्लबों की स्थापना की जा चुकी है। समीक्षाधीन अवधि में सी. सी. आर. टी. ने भारतीय कला एवं संस्कृति पर 50 व्याख्यान आयोजित कराए तथा 1340 शिक्षा-किट तैयार किए। इसके द्वारा 20 पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं, जिन में पुनर्मुद्रण भी शामिल है तथा पूर्वोत्तर सहित देश के सभी भागों में 544 छात्रवृत्तियां प्रदान की गई। सी. सी. आर. टी. ने छात्रवृत्ति पाने वालों के लिए एक सांस्कृतिक समारोह तथा सांस्कृतिक संगठनों के कर्मचारियों, पुस्तकालय व्यावसायिकों और ब्यौरोक्रेट्स के लिए 3 लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। मंत्रालय द्वारा समय - समय पर केंद्र के कार्यों की समीक्षा की गई और पाया गया कि समीक्षाधीन अवधि में शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के लिए यह दक्षतापूर्ण तरीके से कार्य कर रहा है।

<u>कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान (के. के. एफ.)</u>

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान की स्थापना भारतीय कला में पारंपरिक मूल्यों विशेषत: नृत्य और संगीत के क्षेत्रों में परिरक्षण हेतु एक सांस्कृतिक अकादेमी के रूप में रूक्मिणी देवी अरूण्डेल द्वारा 1936 में की गई थी। इस संस्थान के प्रतिबद्ध उद्देश्य सभी कलारूपों तथा उनके क्षेत्रीय रूपों का एकीकरण करना तथा परिणामत: मूल कला के मानक स्थापित करना है। कलाक्षेत्र अपने अधीन रूक्मिणी देवी ललित कला महाविद्यालय, जो भरतनाट्यम के लिए समर्पित है, कर्नाटक संगीत और दृश्य कला, टॉ - स्कूल शिल्प अनुसंधान एवं शिक्षा केंद्र और दो पुस्तकालय जो छात्रों और विद्वानों के लिए कला एंव संबंधित विषयों के पुञ्ज के रूप में जाने जाते हैं, का पोषण करता है। 2012 - 13 के दौरान प्रतिष्ठान ने कूताम्बलम के नवीकरण का कार्य शुरू किया, जिससे निर्माण कार्य में परिवर्धन एवं परिवर्तन के साथ ध्वनि और मंच प्रबंधन में स्टेट ऑफ आर्ट टैक्नोलॉजी स्थापित की जा सके और साथ में स्टेज उपस्करों, माइक्रोफोन्स, ध्वनि एवं प्रकाश उपस्करों तथा स्टेज पोडियम की खरीद की जा सके। संग्रहालय परियोजना के लिए श्रीमती रूक्मिणी देवी के कलेक्शन में 1408 वस्तुओं के व्यापक रिकॉर्ड तैयार किए, यह कार्रवाई सूचीकरण प्रक्रिया के रूप में की गई। उसने प्रख्यात विद्वानों के जरिए 4 कार्यशालाएं तथा 3 व्याख्यानमालाएं आयोजित की तथा श्रव्य अभिलेखागार सामग्री का 100 घंटे का डिजिटाइजेशन कार्य पूरा किया, 100 घंटे का विडियो प्रलेखीकरण कार्य किया एवं 1500 फोटोग्राफ तैयार किए। प्रतिष्ठान ने पांच उत्सव और भारत में कई प्रदर्शन किए तथा एक प्रदर्शन देश के बाहर भी किया। वर्ष 2013-14 के दौरान प्राचीन भारतीय कला के प्रसार के लिए कला क्षेत्र प्रतिष्ठान विविध गतिविधियों में संलग्न रहा। भरतनाट्यम कलाकार श्रीमती प्रियदर्शनी गोविंद ने अगस्त 2013 में निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला तथा इसकी गतिविधियों में नए प्रयास किए गए। वार्षिक उत्सव और अधिक भव्यता के

साथ मनाए गए, जिसमें भाव भावनम् कथकली उत्सव भी मनाया गया जिसने इस कला रूप को चेन्नई में लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ताकि तत्संबंधी समीक्षात्मक आलोचना एवं समझ को बढ़या जा सके। माननीय संस्कृति मंत्री द्वारा ग्यारह दिवसीय 61वें वार्षिक कला समारोह का उद्घाटन किया गया। अक्तूबर 2013 में तीन दिवसीय समारोह को आयोजन भी किया गया, श्रावणकोर के महान कवि एवं रचयिता महाराज स्वामी तिरूमल की दो सौंवी जयन्ती मनाई गई, इस अवसर पर प्रख्यात कलाकारों द्वारा संगीत और नृत्य के क्षेत्र में उनके योगदान को लेकर अग्रणी व्याख्यान और संगीत कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। भारत के पौराणिक संगीतज्ञों के जीवन और योगदान पर उल्लेखनीय कार्यक्रम जैसे मीरादासी उत्सव प्रख्यात संगीतज्ञ एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी और रचयिता आर. विद्यानाथ को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित किए गए तथा मुत्तुस्वामी दीक्षितर संगीतज्ञ की याद में ट्रिनिटी कार्यक्रम आयोजित किए गए। मंत्रालय नियमित रूप से कलाक्षेत्र के निष्पादनों का मॉनीटरण कर रहा है और यह पाया गया है कि कला क्षेत्र अपेक्षित दिशा में ठीक तरह से कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि

राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एन. सी. एफ.) दिनांक 28 नवंबर 1996 को भारत के राजपत्र में छपी राजपत्र अधिसूचना के तहत चेरिटेबल एंडाओमेंट एक्ट 1890 के अंतर्गत एक ट्रस्ट के रूप में संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाया गया था। यह भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नवप्रवर्तन की व्यवस्था करता है। यह अपनी व्यवस्था से संस्कृति संबंधी प्रयासों हेतु सार्वजनिक तथा निजी भागीदारी के सृजन के लिए बौद्धिक तथा वित्तीय दोनों रूप से लोगों के समर्थन को व्यक्त करता है। संस्कृति जिसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है, उसमें मूर्त तथा अमूर्त विरासत शामिल हैं। 31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार एन. सी. एफ. के पास उपलब्ध कुल धनराशि 41.47 करोड़ रू. है और जिसमें भारत सरकार द्वारा प्राथमिक संग्रहित निधि के रूप में 19.50 करोड़ रू. गौण संग्रहित निधि - 11.86 करोड़ रू. तथा परियोजना निधि - 10.11 करोड़ रू. शामिल हैं। वर्ष 2012 - 13 के दौरान एन. सी. एफ. ने 4 परियोजनाओं की पुनर्मरम्मत का कार्य शुरू किया और सी. एस. आर. के माध्यम से 3 नई परियोजनाएं शुरू की एवं 3 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। सभी परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है। वर्ष के दौरान एन. सी. एफ. ने 5 परियोजनाएं पूरी की हैं (1) आर. ई. ए. सी. एच. विरासत उत्सव 2012, उत्तराखण्ड (2) प्राकृतिक विरासत आरेख का मार्ग पब्लिकेशन का प्रायोजन (3) नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (4) पुरा अवयव और कला कोश अधिनियम 1972 में संशोधन (5) आई. ए. एस. ए. सम्मेलन, दिल्ली के लिए 25 भारतीय सहभागियों को भेजना। वर्ष 2013 - 14 के दौरान 12 नई परियोजनाओं के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए इन परियोजनाओं में से 2 परियोजनाओं नामत: (1) रामायण

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

संक्षेपण और (2) कोञ्ची मुजिरिस बाइनेल 2012 कैटालोग का प्रकाशन कार्य समीक्षाधीन अवधि में पूरा किया गया। एन. सी. एफ. की नियमित अवधि पर समीक्षा तथा निष्पादन एवं कार्यों का मॉनीटरण मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

<u>अकादेमियां तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय</u>

संस्कृति मंत्रालय के अधीन तीन राष्ट्रीय अकादेमियां नामत: संगीत नाटक अकादेमी, साहित्य अकादेमी ललित कला अकादेमी तथा राष्ट्रीय विद्यालय (एन. एस. डी.) हैं जो पूर्णत: वित्तपोषित स्वायत्त संगठन हैं। मंत्रालय द्वारा देश में मंच, साहित्य और प्लास्टिक कलारूपों का संवर्धन करने के लिए इन अकादेमियों की स्थापना की गई थी। ये अकादेमियां इन कलारूपों के संवर्धन के लिए अपने संबंधित वर्गीकृत क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करती आ रही हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन. एस. डी.) की स्थापना, विभिन्न समूहों को नाट्य कला में प्रशिक्षण देकर देश में मंच कार्यकलापों का संवर्धन करने के लिए की गई थी। एन. एस. डी. देश का एक प्रतिष्ठित संस्थान माना जाता है।

<u>संगीत नाटक अकादेमी (एस. एन. ए.)</u>

संगीत नाटक अकादेमी की स्थापना, देश में मंच कलाओं के संवर्धन के लिए वर्ष 1953 में की गई थी। अकादेमी, भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक के संवर्धन और विकास, मंच कला और संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण के मानदंड को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। एस. एन. ए. का नई दिल्ली में अपना कथक केंद्र तथा मणिपुरी नृत्य के संवर्धन के लिए इंफाल में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी है। इन केंद्रों के अतिरिक्त, एस. एन. ए. के पास भारत में विशिष्ट कलारूपों के संवर्धन के लिए केरल में कुट्टीयट्टम केंद्र और बारीपाडा, जमशेदपुर में छऊ केंद्र हैं। अकादेमी भारत की मंच कलाओं को प्रोत्साहित करने में प्रयासरत है तथा इसे प्रख्यात अनुभवी और युवा पीढ़ी के प्रतिभावान कलाकारों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रवृत्ति प्रदान करने एवं प्रलेखन के माध्यम से प्रदर्शनों के द्वारा प्राप्त करता है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान संगीत नाटक अकादेमी ने 204 घंटों की वीडियो रिकार्डिंग की तथा 25 घंटे की ऑडियो रिकार्डिंग, 12235, ब्लेक एवं व्हाइट और कलर फोटोग्राफ एस. एन. ए. के अभिलेखागार में जोड़े गए, 2 पुस्तकें प्रकाशित हुई तथा अकादेमी सर्वेक्षण, मैपिंग और प्रलेखन,

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

निष्पादन कला फोरम लक्षदीप द्वारा जर्नल का एक अंक निकाला गया। 6 भारतीय द्वीपों और 16 कलारूपों की पहचान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के लिए की गई। दर्शकों के लिए गुवाहाटी में 250 कठपुतलियों संगीत वाद्यों की प्रदर्शनी 15 दिनों के लिए चलाई गई। समीक्षाधीन अवधि में इसकी पुस्तकालय में 263 पुस्तकें और जोड़ी गई। 2013 - 14 के दौरान एन. एस. ए. ने कुल 8559 घंटों की रिकार्डिंग करवाई तथा 7965 घंटों की वीडियों रिकार्डिंग करवाई तथा 16 एम. एम. फिल्म सामग्री की 44 लाख लीड्स तैयार कीं। अकादेमी के अभिलेखागार में कुल 9224 रंगीन फोटो और जोड़ी गई। अभिलेखागार का कुल संग्रह में 2,69,683 और 40443 फोटोग्राफ और रंगीन स्लाइड हैं। 9844 दृश्य श्रव्य डिस्कों का संग्रह, रिकार्ड किए 761 कैसेट्स, उपहार स्वरूप दिए गए 165 आडियों कैसेट्स 1129 वाणिज्यिक कम्पैक्ट डिस्क, 79 उपहार स्वरूप दी गई डिस्क 51 वी. सी. डी., 36 उपहार वी. सी. डी., भरतनाट्यम की 2 डी. वी. डी. और 45 उपहार की गई डी. वी. डी. (ज) भी इसमें शामिल हैं। अकादेमी के संग्रहालय में संगीतवाद्यों, मुखौटे, कठपुतली, हैडगियर्स तथा निष्पादन कला से संबंधी अन्य आर्टिफैक्ट सहित 2500 से भी अधिक वस्तुएं हैं। 2013 के लिए अकादेमी की फैलोशिप और पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया जिस में तीन प्रख्यात व्यक्तियों को फैलोशिप प्रदान की गई तथा संगीत, नृत्य और रंगमंच से जुड़े 35 व्यक्तियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके आरंभ से ही मंत्रालय नियमित रूप से इसके कार्यों का मॉनीटरण कर रहा है और पाया गया है कि अकादेमी अपने कर्तव्यों का निर्वहन संतोषजनक तरीके से कर रही है।

<u>साहित्य अकादेमी</u>

साहित्य अकादेमी की वर्ष 1954 में संस्कृति मंत्रालय के स्वायत्तशासी संगठन के रूप में स्थापना की गई थी। साहित्य अकादेमी एक राष्ट्रीय संगठन है जो सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को पोषित एवं समन्वित करता है तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देकर भारतीय भाषाओं का विकास करने तथा उच्च साहित्यिक मानक तय करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता है। यह देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और इसके संवर्धन के लिए प्रमुख संस्थान है। यह देश का एकमात्र संस्थान है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यकलाप चलाता है। अपनी स्थापना के 56 वर्ष से अधिक की अवधि में इसने अच्छे विचारों एवं अच्छी पठन आदतों की बढ़ावा देने, सेमिनारों, संगोष्ठियों, व्याख्यानों, चर्चाओं, पठन एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत की विभिन्न भाषाओं एवं साहित्यिक क्षेत्रों के बीच बातचीत को जीवित रखने के लिए जिसमें कार्यशालाओं एवं व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से आपसी स्थानांतरणों की गति को बढ़ाने के लिए लोक कलाओं का प्रयोग शामिल है और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तित्व और सृजनात्मक कार्य

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

एंथोलोजी, विश्वकोष, शब्दकोश, पुस्तक सूचियों, लेखक निर्देशिकाओं और साहित्य के इतिहास के प्रकाशन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्कृति का विकास करने का प्रयास किया है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान साहित्य अकादेमी ने 2250 पुस्तकों की खरीद की, जिसमें विदेशी पुस्तकें और 75 पत्रिकाएं और जर्नल्स भी शामिल हैं। इसने 3 क्षेत्रीय पुस्तकालयों कोलकाता, मुम्बई, बंगलुरू और मुख्यालय के लिए कम्प्यूटर और प्रिंटर भी खरीदे। अकादेमी ने 5 भाषाओं में रिट्रो कनवर्जन एवं संदर्भग्रंथ परियोजना कार्य पूरा किया तथा रविन्द्रनाथ टैगोर पर महत्वपूर्ण इन्वेंटरी तैयार की। पुनर्मुद्रण सहित 329 पुस्तकें साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में निकाली गई। भारतीय साहित्य के 6 अंक, समकालीन भारतीय साहित्य के भी 6 अंक प्रकाशित किए गए तथा 101 लेखकों को रॉयल्टी भी प्रदान की गई। वर्ष के दौरान सेमिनार, लेखक बैठक, कवि बैठक, सिम्पोजियम, साहित्यिक मंच सहित पूर्वोत्तर के कार्यक्रमों सहित 404 अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। 12 लेखकों को यात्रा अनुदान दिया गया तथा 5 साहित्यिक विनिमय कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। यात्रा भत्ता/मानदेय के लिए 36 राज्य अकादेमियों को सहायता प्रदान की गई तथा लेखक आवासीय स्कीम के तहत 8 लेखकों को स्टाइपंड प्रदान किया गया। मंत्रालय नियमित रूप से उसकी गतिविधियों और निष्पादन का मॉनीटरण करता है।

<u>ललित कला अकादेमी (एल. के. ए.)</u>

भारत में दृश्य कलाओं के विकास और संवर्धन के लिए वर्ष 1954 में स्थापित ललित कला अकादेमी, एक राष्ट्रीय कला अकादेमी है। अकादेमी का मुख्य कार्य देश में विशेष रूप से समकालीन कला के क्षेत्र में कला के विकास के लिए कलाकार वर्ग को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। कला के विकास के प्रति अकादेमी की वचनबद्धता नई दिल्ली में इसके मुख्यालय तथा भुवनेश्वर, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढी़, नई दिल्ली में स्थित इसके क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से स्पष्ट है। पूरे भारतीय महाद्वीप में काम करने वाले एक सांस्कृतिक निकाय के रूप में यह भारत की विविध संस्कृतियों को आपस में जोड़ने, व एक ऐसा सांस्कृतिक तानाबाना जो सृजनात्मक प्रतिभा और वैभवशाली अभिकल्पों रूपी रंगीन धागों के कारण भव्य प्रतीत होता है और जो भारतीय जीवन की मनमोहक विशिष्टताओं को उजागर करता है, को बुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अकादेमी ने 'आरटिस्ट ऑन आर्ट' नामक एक नई श्रृंखला शुरू की है, यह कार्यक्रम अकादेमी का नियमित आयोजन है। इसे आधुनिक एवं वर्तमान भारतीय कला की प्रगति में प्रमुख योगदान देने वाले कलाकारों के अनुभवों एवं यादों को जोड़कर कला के मौखिक इतिहास का दस्तावेज बनाने क लिए बनाया गया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादेमी द्वारा एक प्रख्यात कलाकार तथा एक कला आलोचक अथवा कला के इतिहासकार अथवा क्यूरेटर को कलाकार के साथ बातचीत करने

के लिए बुलाया जाता है। कलाकार अपने कार्यों का स्लॉईड शो प्रस्तुत करता है और एक विशिष्ट कलाकृति को बनाने की प्रक्रिया की गहन जानकारी और ब्यौरा देता है। आलोचक, कलाकार की इस यात्रा को बारीकी से समझता है। जिससे कलाकार और उसके कार्यों को समझने में मदद मिलती है। इस परियोजना के पीछे एक अभिलेखीय मंशा भी है ताकि अकादेमी के पास ऐसी सामग्री आ जाए जिसे अकादेमी संरक्षित कर सके और उसका प्रयोग अनुसंधान के लिए हो सके। वर्ष 2012 - 13 के दौरान ललित कला अकादेमी ने 8 प्रदर्शनियों का आयोजन किया जिनमें 3 क्यूरेटिड तथा गतिशील प्रदर्शनियां थी, 2 इनकमिंग प्रदर्शनियां भी आयोजित की गईं। इसके अतिरिक्त वर्ष के दौरान एक राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत शिष्टमंडल के 11 सदस्यों ने विदेश का दौरा किया और 4 विदेशी शिष्टमंडल के सदस्यों ने भारत का दौरा किया। ललित कला अकादेमी ने 4 शिविर और कार्यशालाएं आयोजित किए तथा रिपोर्टिंग अवधि में कलाकारों ने 3 आवासीय कार्यक्रमों में सहभागिता की। ललित कला दीर्घा क्षेत्रीय केंद्र लखनऊ और क्षेत्रीय केंद्र चेन्नई में 271 प्रदर्शनियां आयोजित की गई। वर्ष 2013 - 14 के दौरान 01 शिष्टमंडल ने शिष्टमंडल विनिमय कार्यक्रम के तहत विदेश का दौरा किया, 01 आउटगोइंग और 2 मोबाइल/विशेष प्रदर्शनी भी ललित कला अकादेमी द्वारा आयोजित की गई। भारतीय कला संस्कृति और भाषा कार्यक्रम के तहत एक शिविर/ कार्यशाला भी इसके द्वारा आयोजित की गई, इसके अलावा, विविध अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिनमें शामिल हैं - पी. एल. एस. आई. खंड जारी करना, 24 भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की प्रदर्शनी, परंपरागत और समकालीन मुखौटों पर प्रदर्शनी, दुर्लभ पाण्डुलिपियों पर प्रदर्शनी, संगीत और नृत्य पर श्रव्य - दृश्य सी.डी. तैयार की गई। 48 फिल्में/ आर्टिस्ट ऑन आर्ट तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। समीक्षाधीन अवधि में ललित कला अकादेमी द्वारा इसकी दीर्घा में 138 प्रदर्शनियां आयोजित की गई। मंत्रालय नियमित रूप से ललित कला अकादेमी के निष्पादनों की समीक्षा करता रहा है और पाया है कि अकादेमी अपने क्षेत्र में संतोषप्रद कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन. एस. डी.)

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विश्व का एक अग्रणी रंगमंच प्रशिक्षण संस्थान है तथा भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1959 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा अपनी एक सहायक ईकाई के रूप में की गयी थी और बाद में 1975 में यह एक स्वतंत्र ईकाई बन गई। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित एक स्वायत्त संस्थान है। इस विद्यालय का उद्देश्य अभिनव और निर्देशन और स्टेज क्राफ्ट के क्षेत्र में छात्रों को प्रशिक्षण देना है और यह तीन वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा देता है जो कि स्नातकोत्तर हिंदी के समकक्ष है और भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यताप्राप्त है। एन. एस. डी. ने ग्रीष्म थियेटर उत्सव – 12 के तहत 12 तथा

7 नाटकों का मंचन किया। प्रयोजन के माध्यम से दिल्ली में 6 निष्पादनों का मंचन भी किया। इसने 63 थियेटर कार्यशालाओं का आयोजन किया, जिसमें एन. टी. पी. सी. / गेल द्वारा प्रायोजित 18 कार्यशालाएं भी शामिल हैं समीक्षाधीन वर्ष के दौरान मुम्बई में 6 बाल थियेटर कार्यशालाएं भी आयोजित की गई। देश के विभिन्न भागों से आए बच्चों द्वारा देश की भिन्न - भिन्न एवं सम्पन्न संस्कृति को दिखाने के लिए भारतीय निष्पादन लोक परम्परागत कलाओं पर जश्ने बचपन उत्सव आयोजित किया गया। 2013 - 14 के दौरान 14वां बी. आर. एस. थियेटर उत्सव आयोजित किया गया, जिसमें भारत और विदेशों से लाए 70 से भी अधिक थियेटर समूहों ने मंचन किया। दिल्ली के बाहर समानांतर रूप से गुवाहटी और मणिपुर में भी साथ - साथ बी. आर. एम. आयोजित किया गया। एन. एस. डी. ने बाल संगम उत्सव 2013 का आयोजन किया जिसमें देश के 17 बाल थियेटर समूहों ने भाग लिया और तीन स्थानों अभिमंच, सम्मुख और एन. एस. डी. मुक्त थियेटर पर अपना प्रदर्शन किया। थियेटर शिल्प कला के सभी पहलुओं जिन में लघु अवधि और सघन थियेटर कार्यशालाएं भी शामिल है, का मंचन किया गया। मंत्रालय इसके निष्पादनों और गतिविधियों का नियमित मॉनीटरण रिता है।

<u>इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आई. जी. एन. सी. ए.)</u>

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र 1987 में स्थापित एक स्वायत्त न्यास है। यह अध्ययन और सभी कलाओं, जिनकी अपनी अलग - अलग पहचान होते हुए एक - दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं, के अध्ययन और अनुभव को समाहित करने वाला एक केंद्र है। आई. जी. एन. सी. ए. का संसाधन सामग्री के संग्रह, कला तथा मानविकी के क्षेत्र में मूल अनुसंधान के कार्यक्रम, विज्ञान की शाखाओं, भौतिकी एवं भौतिक सैद्धान्तिकी, मानव विज्ञान तथा समाज विज्ञान के साथ परस्पर संबंध के माध्यम से सुदृढ़ करने का प्रयास है। केंद्र के शैक्षिक कार्यक्रमों के संचान तथा प्रशासनिक व्यय की पूर्ति इसकी संग्रहित निधि से अर्जित ब्याज से की जाती है। केंद्र को इसकी चुनिंदा परियाजनाओं / स्कीमों तथा साथ ही इसकी भवन परियोजनाओं के लिए निधियां भी प्रदान की गई है। 2012 - 13 के दौरान एन. एस. डी. ने अपना 13वां भारत रंग महोत्सव (बी. आर. एम.) दिल्ली और अमृतसर में मनाया जिसमें, 98 थियेटर समूहों ने भारत और विदेशों से भाग लिया। वर्ष 2012 - 13 के दौरान आई. जी. एन. सी. ए. ने लोक ख्याना पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार अन्तर सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र, बी. एच. यू. और नाट्यशास्त्रन में उल्लेखितानुसार पुस्तकालय एवं परम्परा की दृष्टि से 'पूर्वरंग' का आयोजन किया। 4 पाठों, जिसमें संगीत सुधाकर भी शामिल हैं, का प्रकाशन किया गया। महिला दर्शकों के गीतों से संबंधित परियोजना के गीतों का प्रलेखन कार्य शुरू किया गया। पहले से पूरी की गई 6 परियोजनाओं के प्रकाशन का कार्य प्रक्रियाधीन है। इसने रॉक आर्ट पर अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रम की योजना बनाई है, जिसमें सम्मेलन और विशेष

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

सार्वजनिक व्याख्यान, कार्यशालाएं, प्रदर्शनियां, परम्परागत रिवाज कला प्रलेखन तथा बूंदी स्थिति रॉक आर्ट स्थल का क्षेत्रीय दौरा भी शामिल हैं। इसने विभिन्न अनुसंधान परियोजनाएं हाथ में ली एवं उनका प्रकाशन भी करवाया। मल्लाना महाकाव्य की शुरूआत द्रविड़ियन विश्वविद्यालय से मिल कर आरंभ की। आई. जी. एन. सी. ए. ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान परियोजना शुरू की, जिसमें एन. एच. आर. एम., कोहिमा और पूर्वोत्तर की इस्लामी विराशत के संग्रह के आइटम्स के लिए नागा विराशत पर परियोजना भी शामिल है, जो विशेष रूप से ब्रह्मपुत्र, असम और मणिपुर के ब्राक वैल्यू तथा पूर्वोत्तर भारत की टेक्सटाइल परम्परा के विशेष संदर्भ में है। वर्ष 2013 – 14 के दौरान आई. जी. एन. सी. ए. ने दो बड़े कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जो सामान्य भारतीय टेक्सटाइल और कढ़ाई परम्परा पर आधारित थे। अप्रैल में आयोजित ''फुल्कारी'' में पंजाब के विशिष्ट सूई कार्य को रेखांकित किया गया और सितंबर में आयोजित पुनऊत्थान में कुछ सर्वाधिक जटिल और लगभग समाप्त होने वाली कढाई परम्पराओं को प्रस्तुत किया गया। रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली से मिलकर आई. जी. एन. सी. ए. ने स्वामी विवेकानंद पर उनकी 150वीं जयन्ती के अवसर पर उनके जीवन से संबंधित कटपुतली खेल आयोजित किया। कटपुतलियों का यह आयोजन भारतीय लोक कला मंउल, उदयपुर द्वारा प्रस्तुत किया गयाथा, जिसे वर्ष 2013 – 14 के दौरान 100 केंद्रों पर दिखाया गया है। मंत्रालय नियमित रूप से केंद्र के निष्पादन और कार्यों का मॉनीटरण करता रहा है।

<u>संग्रहालय</u>

संग्रहालय, राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर के वृहत भंडार हैं। संग्रहालय लोगों की पसंद विकसित करने तथा उन्हें देश के इतिहास और विरासत के बारे में जानकारी देने और भारत में उपलब्ध सृजनात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने में सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय इन संग्रहालयों को कला, शिक्षा, अनुसंधान तथ परिबोधन के संवध्रन में कार्यरत केंद्रों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहा है। मंत्रालय इसके अधीन सग्रहालयों के निष्पादन की नियमित समीक्षा करता है तथा आवश्यक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। आजकल कलाकृतियों तथा अन्य प्रदर्शनीय वस्तुओं के प्रदर्शन तथा प्रलेखन में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर काफी बल दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में प्रचलित संग्रहालयों के स्तर को ध्यान में रखते हुए संस्कृत मंत्रालय संग्रहालयों की विधियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिक बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में मौजूद संग्रहालयों के अन्तरराष्ट्रीय मानकों को ध्यन में रखते हुए संस्कृति संत्रालय का 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान महानगरों में मुख्य संग्रहालयों के उन्नयन तथा आधुनिकीकरण का कार्य प्रारंभ करने का प्रस्ताव है। इस संदर्भ में इन संग्रहालयों द्वारा शुरू किए जाने वाले फोटो प्रलेखन तथा डिजिटीकरण का कार्य महत्वपूर्ण हो

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

जाता है। संग्रहालय अपने सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कार्यकलापों के माध्यम से आम जनता तथा बच्चों तक पहुंचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2012 – 13 के दौरान, शिकागो कला संस्थान और ब्रिटिश संग्रहालय जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के माध्यम से संग्रहालय का क्षमता निर्माण और उसके नेतृत्व का विकास करने के लिए लगातार प्रयास किए गए थे। दर्शकों के अनुभव और स्वयं सेवकों के प्रशिक्षण पर भी ध्यान केंद्रित किया गया था। 2011 – 12 और 2012 – 13 (दिसम्बर 2012 तक) के दौरान संग्रहालयों के निष्पादन की समीक्षा की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :

<u>भारतीय संग्रहालय, कोलकाता</u>

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता, जिसकी स्थापना भारतीय संग्रहालय अधिनियम, 1910 के अनुरूप की गई थी, भारत में अपनी किस्म का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संस्थान है। यह संग्रहालय सदियों पुराने सांस्कृतिक लोकाचारों तथा परंपराओं को प्रस्तुत करने वाली भारतीय तथा विदेशी कलाकृतियों का अद्‌वितीय खजाना है। संग्रहालय में कुछेक दुर्लभ मूर्तियों, कांस्य एवं धातु वस्तुओं, सिक्कों, वस्त्रों तथा सजावटी कला नमूनों सहित चित्रों का विशाल भंडार है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान कलाकृतियों, पुरातत्व एवं मानव विज्ञान अनुभागों के आधुनिकीकरण और विकास कार्य को सुदृढ़ किया गया है। संग्रहालय द्‌वारा व्यापक स्तर पर फोटो प्रलेखन का कार्यक्रम शुरू किया गया है। वर्ष 2012 – 13 के दौरान भारतीय संग्रहालय ने दीर्घाओं, पुस्तकालय, संरक्षण एकक, कलाकृतियों मॉडलिंग एककों, प्रकाशन एकक आदि को परिरक्षण के लिए परियोजनाएं शुरू की है। सी. आई. एस. एफ. कार्मिक लगाकर सुरक्षा भी प्रदान की गई। इसने भौतिक रूप से कला, पुरातत्व, प्रणाली विज्ञान वस्तुओं का भौतिक सत्यापन किया। संग्रहालय ने 748 वस्तुओं का रसायनिक शोधन किया जिनमें 310 सिक्कें एवं कीमती पत्थर शामिल हैं, और इसके द्‌वारा पुराने मूल्यवान पुरा-अव्ययों को नैगेटिव (ज) भी शामिल हैं, इसमें 2190 पुराअव्यवों के फोटो प्रलेखन भी है। इसके द्‌वारा 814 प्लास्टर कास्ट रैप्लिकाएं बनाई गई, 779 प्लास्टर कास्ट कलर फिनिश काम भी पूरे किए गए, 56 रेप्लिका (ज) की रंग शोधन प्रक्रिया की गई 1009 रेप्लिका (ज) का कलर फिनिशिंग कार्य पूरा किया तथा 12 शिक्षा संस्थानों को किट्‌स प्रदान किए। भारतीय संग्रहालय ने अपनी 198वीं जयंती पर ''प्राचीन भारतीय टैरोकोटा''पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजिजत की जिसका नाम ''जोरासंको ठाकुर बरी ओ रबीन्द्रनाथ'' रखा गया था, यह चित्रकला पर थी, जिसमें फोटोग्राफ भी शामिल हैं जो कि कवि गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित की गई थी। एक अन्य संगोष्ठी ''राजा सर सौरेंद्र मोहन टैगोर द्‌वारा दान में दिये गए संगीत वाद्‌य'' नाम से थी, का आयोजन अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर भारतीय संग्रहालय में आयोजित की गई, भारतीय संग्रहालय द्‌वारा संग्रहालय इंटर्नशिप पर पाठ्‌यक्रम कोलकता

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

विश्वविद्यालय के म्यूजियोलॉजी विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों के लिए चलाया गया। कुमारी शैलजा माननीय संस्कृति मंत्री संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने भारतीय संग्रहालय का दौरा किया। एक अन्य प्रदर्शनी जिसका नाम था – ''गणेशा: वसंत चौधरी द्वारा उपहार'' का आयोजन भारतीय संग्रहालय के आशुतोष बर्थ सेंटिनरी हॉल में किया गया। 2 अन्य सेमिनार और 6 विशेष व्याख्यान भी विभिन्न अवसरों पर आयोजित किये गए। वर्ष 2013 – 14 के दौरान अपनी 200 की वर्षगांठ मनाने के लिए भारतीय संग्रहालय ने माननीय शिष्ट मंडल के सदस्यों की एक विशेष सभा आयोजित की जिसमें गण्यमान नागरिक और विद्यार्थियों नं 2 फरवरी 2014 को भारतीय सग्रहालय के प्रांगण में भाग लिया। भारत ने माननीय प्रधानमंत्री के आधुनीकृत भारतीय संग्रहालय का उद्घाटन किया और भारतीय संग्रहालय की 200 वीं वर्षगांठ पर 1 मॉनोग्राफ भी जारी किया तथा साथ में इस यादगार के लिए 200वीं वर्षगांठ के डाक टिकट भी जारी किये। इसके आधुनीकिकरण एवं विकास परियोजनाओं के तहत प्रमुख कार्य इस प्रकार रहे हैं (1) मरम्मत, पुनर्बहाली, एवं बाहरी और आंतरिक दोनों तरु रंग रोगण (2) पुरातात्विक गंद्धर्व, सजावटी कला और टैक्सटाईल्स, मानव – विज्ञान, सिक्का-दीर्घा का आधुनिकीकरण (3) भरहट दीर्घा, पक्षी रेप्लाइल्स और मत्स्य दीर्घाओं को आगे से थोड़ा उठाना (4) नीकृत आधुनिक दीर्घाओं और कॉरिडोर (ज) में कलाकृतियों का प्रदर्शन (5) कॉरिडोर (ज) का फर्श तैयार करना तथा बलुआ पत्थर से दीर्घाओं का आधुनिकीकरण करना (6) आधुनीकिकृत दीर्घाओं में बिजली का कार्य पूरा करना)7) आधुनीकिकृत दीर्घाओं में हाईन्टैक सुरक्षा सर्वेलेंस कैमरे स्थापित करना (8) साइनेज एवं लेबल तथा आगंतुक सुविधाएं पूर की गई। वर्ष के दौरान दुर्गातिमसिनी पर जिसमें कला, पुरातत्व एवं मानव – विज्ञान दीर्घाओं के संग्रहण से संग्रहालय में प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसके द्वारा 2 कार्यशालाएं, 4 विशेष व्याख्यान, 3 सेमिनार, 2 पुस्तक मेले, 1 प्रशिक्षण कार्यक्रम, 1 अंतरविद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं 2 अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम रिपोर्टिंग वर्ष में पूरे किये गए। मंत्रालय द्वारा संग्रहालय की नियमित रूप से समय – समय पर समीक्षा की जाती है और इसका कार्य संतोषजनक पाया गया है।

<u>सलारजंग संग्रहालय, हैदराबाद</u>

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद 16 दिसम्बर, 1951 को अस्तित्व में आया। यह संग्रहालय 1961 में संसद के एक अधिनियम द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। यह विविध यूरोपीयाई, एशियाई तथा विश्व के सुदूर पूर्वी देशों की कलात्मक उपलब्धियों का भंडार है। इस संग्रह का प्रमुख भाग सालारजंग -।।। के नाम से प्रसिद्ध नवाब मीर युसुफ अली खान द्वारा अधिगृहीत किया गया था। इस संग्रहालय में न केवल भारतीय मूल की कला कृतियों और प्राचीन वस्तुओं का बढ़िया संग्रह है बल्कि पश्चिमी, मध्यपूर्वी और पूर्व के दूर – दराज के क्षेत्रों का भी

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

अच्छा संग्रह है। संरक्षित संचय को बरकरार रखने के लिए कुछ भंडारगृहों को आधुनिक एवं वैज्ञानिक रूप – रेखाओं के आधार पर पुनर्गठित किया गया है। वर्ष 2012 – 13 के दौरान संग्रहालय में पश्चिमी खण्ड जो 5000 वर्ग गज लंबा है, के उपर अतिरिक्त फर्श के निर्माण का कार्य किया गया, जिसमें 8 नई दीर्घाए बनाई जा सके। संग्रहालय में सुरक्षा सुविधाओं के क्रमोन्नयन के लिए 26 सी. आई. एस. एफ. सुरक्षा कार्मिकों को लगाया गया। संग्रहालय में सी. सी. टी. वी. कैमरे, अग्नि चेतावनी पद्धति और अग्नि नल पद्धति उपलब्ध कराने का कार्य वर्ष के दौरान संग्रहालय में सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से संपन्न किया गया। संग्रहालय में अनेक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक गतिविधियां जैसे ग्रीष्मकालीन कला शिविर, बाल सप्ताह, हिंदी सप्ताह, संगीत सप्ताह, सतर्कता सप्ताह आदि आयोजित किय गए। इसके द्वारा 18 विशेष प्रदर्शनियां और 7 विशेष व्याख्यान आयोजित किये गए। वर्ष 2013 – 14 के दौरान संग्रहालय ने अपनी दीर्घाओं के पुनर्गठन का कार्यक्रम जारी रखा जिसमें इस्लामिक कला ओर यूरोपियन मार्बल दीर्घा तथा बच्चों के लिए प्रदर्शन कार्य और सिक्का दीर्घा शामिल है एवं कलाकृतियों का प्रलेखन शामिल है। संग्रहालय द्वारा अनेक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक गतिविधियों जेसे ग्रीष्मकालीन कला शिविर, बाल सप्ताह उत्सव, संगीत सप्ताह आदि का आयोजन भी किया गया। इसके द्वारा 16 विशेष प्रदर्शनियां, सेमिनार, 2 कार्यशालाएं, विशेष व्याख्यान, चल फोटो प्रदर्शनी आदि का आयोजन रिपोर्टाधीन वर्ष में किया गया। पुस्तकालय के भण्डार में इजाफा करने के लिए विभिन्न पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियां प्राप्त की गई, और पुस्तकालय की पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों के परिरक्षण एवं संरक्षण का कार्य किया गया। मंत्रालय नियमित रूप से सलारजंग संग्रहालय के निष्पादन की समीक्षा करता रहा है और पाया गया है कि यह संग्रहालय अपेक्षित तरीके से अपने कर्तव्यों का सही निर्वाहन कर रहा है।

<u>विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वी. एम. एच.), कोलकाता</u>

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, जो राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है, की स्थापना भारत – ब्रिटेन इतिहास पर विशेष बल के साथ 1903 के विक्टोरिया मेमोरियल अधिनियम के तहत की गई थी। इस मेमोरियल में जलरंगों, सिक्कों, मानचित्रों, अस्त्र – शस्त्रों, पाण्डुलिपियों आदि का विशाल भंडार है। जबकि प्रारंभिक संग्रह तथा प्रदर्शन के प्रबंधों को ब्रिटिश साम्राज्य की सामाजिक प्रस्तुति के रूप में देखा जाता है, दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद के संग्रह को भारतीय पहचान यानि राष्ट्रीय पहचान की खोज के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2012 – 13 के दौरान संग्रहालय के पुराने पुस्तकालय के लिए विशेष मरम्मत एवं निर्माण कार्य जारी रखा, ए. एस. आई. कोलकाता मंडलों के माध्यम से विक्टोरिया मेमोरियल भवन का वार्षिक अनुरक्षण एवं रसायन शोधन भवन के भीतर और बाहर दोनों तरफ कराया गया। विक्टोरिया स्मारक संग्रहण की 3200 कलाकृतियों तथा आर. बी. एस. संग्रहण की 1088 कलाकृतियों की गिनती की गई और उनका भौतिक सत्यापन किया गया। इन

कलाकृतियों को स्वस्थान उपचारात्मक शोधन दिया गया। 5 ऑयल चित्रों को ठीक करे उन्हें पूर्व स्थिति में लाया गया तथा 4 प्राचीन फ्रेम्स को संरक्षित किया गया। राजभवन कोलकाता में 12 मार्बल अर्द्ध प्रतिमाओं को तैयार कर उन्हें संरक्षित किया गया। विक्टोरिया मेमोरियल हॉल द्वारा विभिन्न प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिनमें शामिल है अबरिंद नाथ टैगोर के कलात्मक कार्य, असित हल्दर आदि के कलात्मक कार्य। वर्ष 2013 – 14 के दौरान विक्टोरिया मेमोरियल हॉल ने अपने कलाकृतियों के संग्रह पर 4 प्रदर्शनियों का आयोजन किया और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों एवं मेलों में भाग लिया। कलाकृतियों के परिरक्षण, पुर्नस्थापन एवं संरक्षण संबंधी स्कीम के तहत 479 कलाकृतियों को रिकॉर्ड किया गया एवं 32 कागज की कलाकृतियों तथा 4 टेक्सटाइल्स कलाकृतियों को संरक्षित किया गया। दिसंबर 2013 में टेक्सटाइल संरक्षण पर 1 सेमिनार एवं कार्यशाला आयोजित की गई। विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में उच्च न्यायालय एवं राजभवन, कोलकाता को उनकी कलाकृतियों एवं चित्रों को संरक्षित एवं परिरक्षित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। मंत्रालय नियमित रूप से विक्टोरिया मेमोरियल हॉल के निष्पादन का मॉनिटरण करता रहा है।

<u>इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद</u>

सितंबर 1985 में भारत सरकार, संस्कृति विभाग द्वारा इलाहाबाद संग्रहालय को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया था। वर्ष 2012 – 13 के दौरान विभिन्न विषयों पर 360 पुस्तकें प्राप्त की और उनकी प्रविष्टि की तथा उन्हें वर्गीकृत एवं सूचीबद्ध किया। संग्रहालय ने दीर्घाओं के आधुनिकीकरण स्कीम के तहत संग्रहालय के केंद्रीय हॉल में छत की दीवार के रंगरोगण का कार्य शुरू कर उसे पूरा किया। चुनिंदा स्थानों पर दीर्घाओं में रंगरोगण का कार्य पूरा किया गा। कालकृती, खरीद समिति के माध्यम से विभिन्न कलाकृतियों की खरीद की गई, जिनमें शामिल है 1 कुमार गप्ता ईगल टाइप चांदी का सिक्का, आजादी के पहले विश्वयुद्ध के 150वीं वर्षगाठ की याद में सिक्कों के तीन सैट, रासलीला दर्शाने वाले चित्र, गीत गोबिन्द की पाण्डुलिपियां 4 बाहुओं वाले विष्णु की पत्थर की 1 काली मूर्ती आदि। संग्रहायल में कुछ संरक्षण संबंधी कार्य भी किये गए जिनमें शामिल हैं धूम्रीकरण, एन्टी – टर्माइट ट्रीटमेंट और एन्टी – इन्सैक्टीसाइडल ट्रीटमेंट आदि। लगभग 1666 कलाकृतियों जिनमें शामिल हैं 29 चित्र, 305 पत्थर की मूत्रियां, 30 पाण्ज़ुलिपियां, 34 धातु की कलाकृतियां आदि का संरक्षण इस अवधि के दौरा किया गया। वर्ष 2013 – 14 के दौरान संग्रहायल ने उन्हें गांधी दीर्घा आधुनिक चित्रकला दीर्घा और कोमार स्वामी प्रदर्शनी हॉल को चमकाया गया, दीर्घाओं के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के दौरान किया। इसने अनेक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन रिपोर्टाधीन वर्ष में किया जिनमें शामिल है व्याख्यान, कार्यशालाएं, विश्व विरासत दिवस, इलाहाबाद की विरासत पर विद्वत सम्मेलन, विश्व पुस्तक दिवस

आदि। पुस्तकालय को संपन्न बनाने संबंधी इसकी स्कीम के तहत विभिन्न विषयों पर 227 पुस्तकें प्राप्त कर उनकी प्रविष्टियां की गई, 110 पुस्तकों को वर्गीकृत कर सूचीबद्ध किया गया। कुल 804 कलाकृतियों का संरक्षण किया गया जिनमें शामिल है 451 पत्थर की मूर्तियां, 13 अभिलेखीय सामग्रियां 100 पुस्तकों और पाण्डुलिपियां, 41 धातु की कलाकृतियां, 31 टैरेकोटा आदि की खरीद की गई। मंत्रालय नियमित रूप से संग्रहालय के निष्पादन एवं कार्यों का मॉनिटरण करता रहा है।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एन. एम. आई.), नई दिल्ली

इस संस्थान की स्थापना सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत की गई तथा इसे 27.01.1989 को पंजीकृत किया गया। इसे 28 अप्रैल, 1980 को भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयवत का दर्जा दिया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य कला इतिहास, संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान आदि की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के विभिन्न पाठ्यक्रम चलाना है। संस्थान कला इतिहास संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र में एम. ए. तथा पी. एच. डी. के पाठ्यक्रम चलाता है तथा उपाधियां देता है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान एम. ए. कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान के पाठ्यक्रम में 20 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए और 2 विद्यार्थियों ने पी. एच. डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त 240 छात्रों को भारतीय कला एवं संस्कृति, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र में लघु अवधि के पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया गया और वे उनमें उत्तीर्ण भी हुए। रिपोर्टाधीन अवधि में लद्दाक के पश्चिमी हिमालय की बोध कला पर 1 अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। रंग माला परियोजना के लिए फील्ड कार्य और फोटो प्रलेखन भारत कला भवन, उदयपुर पैलेस में तथा कुंभलगढ़ किले में पुस्तकालय से संबंधी कार्य किया गया। इसके द्वारा संग्रहालयों में संचार एवं व्याख्या पर 1 कार्यशाला आयोजित की गई। एन. एम. आई. द्वारा प्रवासी भारतीय विद्वानों के लिए विशेष व्याख्यान श्रृंखला, राजस्थानी लघुचित्रकला पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, समकालीन स्पैनिश कला पर प्रदर्शनी - सह व्याख्यान आदि का आयोजन रिपोर्टाधीन अवधि में किया। वर्ष 2013 - 14 के दौरान, स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम एवं पी. एच. डी. के लिए 55 विद्यार्थियों को प्रवेश मिला। 17 विद्यार्थी एम. ए. कला - इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान ने तथा 8 विद्यार्थी पी. एच. डी. पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण हुए। इसके द्वारा भारतीय कला संस्कृति, कला - समीक्षा ओर भारती कला - निधि पर लघु अवधि पाठ्यक्रम आयोजित किये ेगए जिनमें 248 विद्यार्थियों ने पाठ्यक्रम पूरा किया। ''योगिनी की वापसी'' पर 1 राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा इसी विषय पर सिम्पोसियन, एशियाई और यूरोपियन देशों के अंतरराष्ट्रीय सहयोग से भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के लिए विशेष व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। इसने पूर्वोत्तर पर 1 राष्ट्रीय कार्यशाला एवं सेमिनार तथा अमूरत सांस्कृतिक विरासत पर प्रलेखन (आई. सी. एच.) का

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

आयोजन किया तथा वर्ष के दौरान उक्त कार्य यू. पी. और लेह/लद्दाक में भी पूरे किये गए। यह संस्थान 1 विशेषीकृत क्षेत्र में 1 शिक्षा संस्थान के रूप में अपने कर्तव्यों का विधिवत निर्वाहन कर रहा है।

<u>राष्ट्रीय विज्ञान परिषद् संग्रहालय, कोलकाता</u>

राष्ट्रीय विज्ञान परिषद् संग्रहालय (एन. सी. एस. एम.) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बारे में जागृति पैदा करने, समाज में वैज्ञानिक प्रवृत्ति के विकास एवं वैज्ञानिक साक्षरता को पूरे देश में विकसित करने तथा युवा छात्रों को सृजनात्मक एवं जनपरिवर्तनकारी गतिविधियों में लगाने में कार्यरत रहा है। विगत 35 वर्षों से परिषद् ने 48 विज्ञान संग्रहालयों एवं केंद्रण के माध्यम से 1 राष्ट्रव्यापी अवसंरचना का विकास किया है ताकि इन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें। इसकी गतिविधयां वर्ष भर सुलभ रहती है जो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रक्रिया में लगे समाज के सभी वर्गों से लोगों को लेते हुए उन्हें विज्ञान एवं जनपरिवर्तन की संस्कृति के प्रति विकास हेतु प्रेरित करती हैं। वर्ष 2012 – 13 के दौरान छत्तीसगढ़ विज्ञान केंद्र, रायपुर, आर. एस. सी., जयपुर, पींपरी चिचवाड़ विज्ञान केंद्र, पुणे का उद्घाटन किया गया। आर. एस. सी., कोयम्बटूर, आर. एस. सी. पिलीकुला और एस. आर. एस. सी., जोरहट उद्घाटन के लिए तैयार थे। आर. एस. सी., देहरादून, एस. आर. एस. सी., जोधपुर, एस. आर. एस. सी., पुडुचेरी और "विज्ञान खोज हॉट" विज्ञान सिटी कोलकाता में विकास कार्य किये गए तथा सिक्किम विज्ञान केंद्र गंगटोक का क्रमोन्नयन किया गया, साथ में 8 मीटर डिजीटल डोम प्लेनेटोरियम का निर्माण कार्य प्रगति पर है। एन. सी. एस. एम. ने अनुक नई दीर्घाएं एवं सुविधाएं उपलब्ध कराई है जिनमें शामिल हैं लोकप्रिय विज्ञान दीर्घा, प्री-हिस्टोरिक एनिमल पार्क, मीरर मेज कॉन डी. एस. सी., गुलबर्ग धामपुर में डी. एस. सी. में थियेटर, जी. एसी. सी. पणजी में 8 मीटर डोम डिलीटल प्लैनेटोरियम, एन. एस. सी., मुम्बई में "जलवायु परिवर्तन" दीर्घा, आर. एस. सी. एवं प्लैनेटोरियम कालीकट में "साइंशिय" नामक विज्ञान क्लब, डी. एस. सी. पुरूलिया में "वर्षा जल संचय" सुविध, सांइस सिटी, कोलकाता में 3डी. विडियो गेम नामत: "मेटाब्लास्ट", डी. एस. सी., तिरूनलवेली में मीरर मैजिक दीर्घा क्षेत्रिय विज्ञान सिटी, लखनऊ में "जल हमारा जीव" दीर्घा, आर. एस. सी. गुवाहाटी में "रसायन शास्त्र की दुनिया" दीर्घा एवं इको पार्क विकास कार्य किये है। वर्ष 2013 – 14 के दौरान आर. एस. सी., कोयम्बटूर, तमिलनाडु, जोरहट विज्ञान केंद्र और तारामंडल, असम, एस. आर. एस. सी.,

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

जोधपुर, राजस्थान का उद्घाटन किया गया। इसके अतिरिक्त आर. एस. सी. पिलीकुला, कर्नाटक और एस. आर. एस. सी. एवं तारामंडल पुडूचेरी पूरी तरह तैयार हैं। आर. एस. सी. देहरादून, उत्तराखण्ड तथा विज्ञान सिटी, कोलकाता में 'विज्ञान खोज हॉल' साईंस सिटी, गुवाहाटी, आर. एस. सी. कोट्टयम्, केरल, आर. एस. सी., मैसूर, कर्नाटक, एस. आर. सी. बरगढ़, ओडिशा, एस. आर. एस. सी., उदयपुर, त्रिपुरा, एस. आर. एस. सी., पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम विज्ञान केंद्र, गंगटोक का क्रमोन्नयन तथा डिजिटल डोम प्लैनेओरियम का मामला प्रगति पर है। बी. आई. टी. एम. कोलकाता, वी. आई. टी. एम., बेंगलूर, एन. एस. सी., दिल्ली, एन. एस. सी., गुवाहाटी और एन. एस. सी. मुंबई में पांच ''नव प्रवर्तन हब्स'' का उद्घाटन किया गया। ए. एस. सी., पटना में ''मिरर एण्ड इमेज'' गैलरी, धामपुर में पाठ्यक्रम आधारित चल विज्ञान प्रदर्शनी (एम. एस. ई.) एकक आदि का उद्घाटन भी वर्ष के दौरान किया गया। उपर्युक्त के अलावा दो जल संचयन सुविधाएं एक वर्धमान विज्ञान केंद्र और दूसरी एन. बी. एस. सी., सिलीगुड़ी में संस्थापित की। बी. आई. टी. एम., कोलकाता में विरासत क्लब, डी. एस. सी. ढ़ेकानाम में 3डी थियेटर और आर. एस. सी. भोपाल में फन विज्ञान दीर्घा में ब्रेल लेबंल्स, एन. एस. सी. दिल्ली में गैलीलियो कॉर्नर आदि शुरू किए गए। 39 कार्यशालाएं, 10 सेमिनार, 10 क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम, 18 अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं 3 सम्मेलन समीक्षाधीन अवधि में आयोजित किए गए। एन. सी. एस. एम. के कुल 200 कर्मचारियों को वर्ष 2013 - 14 के दौरान क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया। बृहद् स्तर पर अन्तरराष्ट्रीय परस्पर सहयोग आधारित कार्यक्रम आयोजित किए गए जिन में शामिल हैं - भारतीय अमेरिकन अन्तरिक्ष यात्रियों का कप्तान सुनीता विलियम - अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं ''स्ट्रेटजिक ट्रांसफोर्मेशन'' पर सघन सेमिनार, नई दिल्ली और कोलकाता में ''21वीं सदी में संग्रहालय'', कांडी, श्रीलंका में अन्तरराष्ट्रीय बौध संग्रहायल में बुद्धिज्म पर ''भारत दीर्घा'' की स्थापना। मंत्रालय द्वारा एन. ए. सी. एस. एम. के कार्यों / निष्पादन की नियमित समीक्षा की जाती रही है, और पाया है कि यह अपेक्षित सही तरीके से कार्यों का निष्पादन दिखा रही है।

<u>पुस्तकालय</u>

पुस्तकालय वर्तमान और भावी पीढ़ी के एिल भी ज्ञान की सामग्री के वृहत् भंडार होते है। सदियों पुरानी बहुमूल्य पुस्तकों और पाण्डुलिपियों तथा साथ ही आधुनिक मुद्रित सामग्री को जनता के उपयोग के लिए पुस्तकालयों में रखा जाता है। पुस्तकालय का एक कार्य लोगों विशेषत: विद्यार्थियों तथा युवाओं में पढ़ने की आदत डालना भी है। ये बहुमूल्य पुस्तकें और पांडुलिपियां, जिन्हें बनाने में वर्षों लगे हैं, को

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

आगामी पीढ़ियों के लिए परिरक्षित और संरक्षित किया जाना है क्योंकि ये हमारी सांस्कृति विरासत का भाग है। मंत्रालय के प्रमुख पुस्तकालय इस प्रकार हैं :

<u>राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान</u>

राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान (आर. आर. आर. एल. एफ.) संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना इस महान राजा की द्विशताब्दी जयंती के अवसर पर मई 1972 में की गई थी, जो पुनर्जागरण और आधुनिक काल में अग्रणी रहे तथा जिन्होंने हमारे देश में शिक्षा के प्रचार के लिए अत्यधिक कार्य किया। इस प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य राज्य पुस्तकालय प्राधिकरणों, संघ राज्य क्षेत्रों और पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में कार्य कर रहे स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग के साथ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने की आदत को लोकप्रिय बनाकर और पर्याप्त पुस्तकालय सेवाएं देकर देश में सार्वजनिक पुस्तकालय को सहायता तथा बढ़ावा देना हैं। अपने सीमित संसाधनों के साथ आर. आर. एल. एफ. दो प्रकार की योजनाओं - मैचिंग एवं नॉन मैचिंग के कार्यान्वयन के साथ पूरे देश में पुस्तकालय सेवाओं का विकास तथा पुस्तकालय अभियान को बढ़ावा दे रहा है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान पूरे देश में 12000 से भी अधिक पुस्तकालयों को वित्तीय सहायता मैचिंग और नॉन मैचिंग स्कीमों के आधार पर प्रदान की गई। फाउंडेशन अन्य कार्यक्रमों जैसे - काजी जरूल इस्लाम और रबिन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाने के लिए की कविता "विद्रोही" के प्रकाशन की 90वीं वर्षगांठ मनाने के लिए संयुक्त इंडो - बंगाल समारोह का आयोजन। पुस्तकालयों शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण लोगों के लिए कॉर्नर स्थापित किया गया, जिसके लिए अरूणाचल प्रदेश, असम, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं त्रिपुरा राज्यों की 6 पुस्तकालयों के लिए ऐसे कॉर्नर की स्थापना हेतु 65.89 लाख रू. की राशि जारी की गई। वर्ष 2013 - 14 के दौरान पूरे देश में मैंचिंग और नॉन मैंचिंग स्कीमों के आधार पर 13000 पुस्तकालयों के लिए 39.50 करोड़ से भी अधिक की सहायता प्रदान की गई। प्रशासनिक बंदोबस्त, योजना एवं बजटीय प्रावधानों के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन के लिए राजा राम मोहन राय पुस्तकालय फाउंडेशन की पहचान नोडल एजेंसी के रूप में की गई है। अरूणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु की 14 पंस्तकालयों में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण व्यक्तियों के लिए कॉर्नर स्थापित करने हेतु 96.93 लाख रू. की राशि जारी की गई। इनके अलावा फाउंडेशन पुस्तकों के संग्रह आवास में इजाफा, टी. वी. - सह - वी. सी. पी. सैट लगवाने के लिए भी सहायता करती रही है, ताकि शिक्षा तथा कम्प्यूटर एप्लीकेशन पुस्तकालय के उद्देश्य की पूर्ति की जा सके। मंत्रालय नियमित रूप से इसकी गतिविधियों / कार्यों का मॉनीटरण करता रहा है।

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (डी. पी. एल.)

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (डी. पी. एल.) की स्थापना 1951 में दिल्ली में प्रायोगिक पुस्तकालय परियोजना के तहत की गई थी। लाइब्रेरी का मुख्य उद्देश्य दिल्ली के लोगों को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा तथा लोकप्रिय शिक्षा के लिए एक सामुदायिक केंद्र प्रदान करना है जो भारत में सभी सार्वजनिक पुस्तकालय विकास हेतु मॉडल का कार्य कर सके और पड़ोसी देशों की सलाहकारी सेवाएं प्रदान कर सके। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का केंद्रीय पुस्तकालय, क्षेत्रीय पुस्तकालय, 3 शाखा पुस्तकालयों, 23 उप शाखा पुस्तकालयों, 12 पुनर्वास कॉलोनी पुस्तकालयों, 3 सामुदायिक पुस्तकालयों, दृष्टिहीनों के लिए एक ब्रेल पुस्तकालय, 73 सचल सेवा स्थलों तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 22 डिपाजिट स्टेशनों का विशाल नेटवर्क है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान डी. पी. एल. ने अपने संग्रह में लगभग 40517 पुस्तकें शामिल की वर्ष के दौरान जिल्दसाजों के माध्यम से 40517 पुस्तकों और 133 गजट्स की बाईडिंग करवाई गई और पुस्तकालय के सघन प्रयासों के कारण सदस्यों की संख्या 80448 तक बढ़ गई। पुस्तकालय की अवसंरचनात्मक मदें, जैसे - ए. सी., कूलर, फर्नीचर, यू. पी. एस. और कम्प्यूटर टेबल को पुस्तकालय के सदस्यों और कर्मचारियों के लाभ के लिए क्रय किया गया नि:शुल्क इंटरनेट सेवा को 6 अन्य इकाइयों के लिए बढ़ाया गया। मध्य पुस्तकालय के अग्रभाग के नवीनीकरण के कार्य की सरोजनी नगर भवन के प्रथम और द्वितीय तल के कार्य भी, समीक्षाधीन वर्ष में पूरे हो गए। वर्ष 2013 - 14 के दौरान, लगभग 7300 पुस्तकों और 101 डी. वी. डी. का क्रय किया गया। डी. पी. एल. की 6 इकाइयां, जिनमें करोल बाग, विनोबा पुरी, जनक पुरी, नरेला, आर. के. पुरम (सैक्टर - 8) और शाहदरा पुस्तकालय शामिल है, को नि:शुल्क इंटरनेट सेवाएं प्रदान करने के अतिरिक्त, डी. पी. एल. द्वारा परामर्श, शिक्षण और कौशल कार्यक्रमों आदि के भी आयोजन सरोजनी नगर पुस्तकालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान आयोजित किए गए।

अभिलेखीय पुस्तकालय

एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता

1984 में भारत सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया है। अब एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मुख्य उद्देश्य भाषा, साहित्य, संस्कृति तथा सामाजिक आर्थिक पहलुओं के संबंध में अनुसंधान परियोजनाएं शुरू करना है। यह संस्थान इस उप महाद्वीप में कलात्मक तथा बौद्धिक, दोनों

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

ही, संस्कृतियों की सामग्रियों का सबसे पुराना भंडार है। इसमें हिंदू तथा मुस्लिम कालों की दुर्लभ तथा बहुमूल्य पुस्तकों, प्राचीन पांडुलिपियों, तैल चित्रों, सिक्कों आदि का विशाल संग्रह है। यह सोसाइटी पुस्तकालय - तंत्र के विकास, संग्रहालय और उसकी उपभोक्त सुविधाओं के विकास, अनुसंधान तथा प्रकाशन संवर्धन से संबंधित कार्यक्रम चलाती है। यह संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएं भी चलाता है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान, एशियाटिक सोसाइटी ने अनुसंधान कार्यकम के संवर्धन के तहत मानविकी और विज्ञान में 35 परियोजनाओं प्रारंभ की इसने, 2 सेमिनार और 7 व्याख्यान आयोजित किए। एशियाटिक सोसाइटी ने 8 पुस्तकें, 2 जर्नल, 10 मासिक बुलेटिन और 5 पुस्तिकाओं का प्रकाशन वर्ष 2012- 13 में किया। इसने पुस्तकों और जर्नलों को भी अभिप्राप्त किया और दुर्लभ पुस्तकों, जर्नलों एवं मोनोग्राफ्स का परिरक्षण किया। रेप्रोग्रैफिक इकाई विकास के तहत, दुर्लभ पुस्तकों और पाण्डुलिपियों का प्रलेखन जारी रहा। वर्ष 2013 - 14 के दौरान, सोसाइटी ने 01 पुस्तक प्रकाशित की हैं। अनुसंधान कार्यों के संवर्धन कार्यक्रम के तहत इसने 24 परियोजनाएं शुरू की जिनमें शामिल हैं - बाह्य परियोजनाएं - मानविकी और विज्ञान में, जिसके लिए स्कालर्स का सहयोग लिया गया। इसने 01 सेमिनार और 03 व्याख्यान रिपोर्टाधीन वर्ष में आयोजित कराएं। सोसाइटी ने पुस्तकालय पद्धति के विकास हेतु विभिन्न पुस्तकों और जर्नल्स का प्रापण भी किया है। इसने लाइब्रेरी के लिए सतत् रूप से दुर्लभ पुस्तकों, पाण्डुलिपियों व चित्रा की खरीद व उनका परिरक्षण जारी रखा। मंत्रालय द्वारा सोसाइटी के कार्यों व निष्पादन की समीक्षा प्रशासनिक एवं वित्तीय दृष्टि से काफी गहराई के साथ की जाती रही है। उनके द्वारा उचित कार्रवाई की जाती है।

<u>खुदा बक्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना</u>

खुदा बक्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी (के. बी. ओ. पी. एल.), पटना संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संगठन है। दिसंबर 1969 में संसद के अधिनियम के तहत के. बी. ओ. पी. एल. को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया और जुलाई 1970 से इसने स्वायत्त संस्थान के रूप में अपना कार्य आरंभ किया जिसका संचालन भारत सरकार द्वारा गठित बोर्ड द्वारा किया जाता है। इसके पास 21 हजार से अधिक पाण्डुलिपियां, 2.80 लाख से अधिक मुद्रित पुस्तकें है। जिनमें शामिल है - पत्रिकाएं और मुगल, राजपूत, अवध, इरानियन, टर्की स्कूलों की 2000 से अधिक मौलिक चित्रों का सम्पन्न संग्रहण वर्ष 2012 - 13 के दौरान पुस्तकालय ने 4664 पुस्तकें व 26 पाण्डुलिपियों, 512 पत्रिका टाइटली, 99 नई ऑडियों, वीडियों कैसेट्स और 11 सी. डी. (ज) का प्रापण किया। पुस्तकालय की मुद्रित 2.22 लाख पुस्तकों को उसकी वैबसाइट पर डाला गया तथा समीक्षा अधीन अवधी के दौरान दुर्लभ सामग्री की 5 पुस्तकें प्रकाशित की गई। 4 सेमिनारों, 1 वार्षिक व्याख्यान, 4 विस्तार व्याख्यानों, 1 लोकप्रिय व्याख्यान, 2 मुशायरों, 1 प्रदर्शनी का आयोजन भी पुस्तकालय में किया गया। वर्ष

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

2013 - 14 के दौरान पुस्तकालय में 4031 पुस्तकों, 69 पाण्डुलिपियों, 77 पत्रिकाओं एवं 25 समाचार पत्रों की खरीद समीक्षा अधीन अवधि में की गई। दुर्लभ सामग्री की 10 पुस्तकें भी पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित की गई और इसके द्वारा 1 लोकप्रिय व्याख्यान, 1 प्रदर्शनी, 1 पुस्तक विमोचन समारोह और 1 राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया तथा वर्ष के दौरा 2 वरिष्ठ अध्यवेताओं, 5 कनिष्ठ अनुसंधान अध्यवेताओं को अनुसंधान परियोजनाएं वर्ष के दौरान सौंपी गई तथा पुस्तक परिरक्षण और रिप्रोग्राफी के तहत 41 पाण्डुलिपियों, 365 मुद्रित पुस्तकों को नियमित बाइंडरों द्वारा जिल्द चढ़वाई गई तथा 56 पाण्डुलिपियों और 56 मुद्रित पुस्तकों की जिल्द ठेके के आधार पर लगवाई गई। इसके द्वारा 4 तिमाही जर्नल्स प्रकाशित करने का कार्य भी किया गया। इस पुस्तकालय के निष्पादन के बाद मंत्रालय ने पाया कि इस पुस्तकालय को प्रदान की गई निधियां इसकी उपलब्धियों के साथ सही मेल खाती हैं।

<u>रामपुर रजा पुस्तकालय</u>

अंतरराष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध रामपुर रजा पुस्तकालय 1774 में रामपुर स्टेट के नवाब फैजुल्ला खान द्वारा बनाया गया था। इस पुस्तकालय को सन् 1975 में भारत सरकार द्वारा अपने नियंत्रण में ले लिया गय था। यह संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा चलाया जा रहा है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के राज्यपाल हैं। इसमें 150 सचित्र पाण्डुलिपियों सहित 17000 पाण्डुलिपियों, 205 ताड़पत्र पाण्डुलिपियां, 5000 लघु चित्र, 3000 इस्लाम सुलेख के नमूने तथा 60000 दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में पुरातत्व, भाषायी एवं लिपियों का संग्रह है जैसे अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, उर्दू, तुर्की तथा पश्तों इत्यादि। ये विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, दर्शनशास्त्र, खगोल विज्ञान, खगोल मिति, गणित, चिकित्सा भौतिक विज्ञान, सूफीवाद, साहित्य कला और वास्तुकला, से संबंधित है। लघु चित्र तुर्क मंगोल, मुगल, फारसी, राजपूत, पहाड़ी अवध, दक्खिन और भारत यूरोपनीय स्कूल को दर्शाती है जिनके नमुने अभी तक प्रकाशित नहीं किये गये है। इस पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं में 140 पुस्तकें प्रकाशित की है और शिक्षाविदों के लिए अपनी स्वयं की वैबसाइट भी शुरू की है। यह पुस्तकालय विरासत महल नामत: हामिद मंजिल में स्थित है जो कि 100 से अधिक साल पुराना है और जिसका भारत यूरोपीय शैली का भव्य वासतुशिल्प उत्तर भारत में अद्वितीय है, और यह 17वीं एवं 18वीं शताब्दी की 17 इतालवी मार्बल मूर्तियों से सुसज्जित है। इसकी दीवारों, छतों तथा कर्निसिज पर प्लास्टर ऑफ पेरिस पर सोने की परत चढ़ाई गई है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान, पुस्तकालय ने 12 पुस्तकों का प्रकाशन और पाण्डुलिपियों के 4020 पृष्ठों, मुद्रित पुस्तकों के 1726 पृष्ठों का संरक्षण 3 लघु चित्र, 38057 पृष्ठों का धूमीकरण, 3750 पृष्ठों का संरक्षण देकर सुरक्षित किया 1061 पुस्तकों पाण्डुलिपियों को जिल्द लागई गई तथा 4 लाख पृष्ठों का

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

डिजिटाइजेशन समीक्षाधीन अवधि में किया गया। वर्ष 2013 - 14 के दौरान 186 पुस्तकें खरीदी गई तथा 19 दुर्लभ प्रकाशन भी क्रय किये गए। अनुवाद कार्य के लिए 6 छात्रवृतियां दी गई। 2013 - 14 के दौरान 30 अनुवादकों को पुरस्कृत किया गया। इसकी लाइब्रेरी के संग्रह से दुर्लभ पाण्डुलिपियों के 1554 पृष्ठों और मुद्रित पुसतकों के 2640 पृष्ठों को वैज्ञानिक आधार पर संरक्षित किया गया। लगभग 2 लाख पृष्ठों का डिजिटाइजेशन किया गया। रजा पुस्तकालय के लिए 26 सुरक्षा गार्ड नियुक्त किये गए। उपर्युक्त के अलावा पुस्तकालय ने बगीचों एवं लॉन तथा संग्रहालय के दरबार हॉल के अनुरक्षण संबंधित कार्यों के लिए अपने कार्यक्रमों को परियोजना के तहत जारी रखा। मंत्रालय द्वारा अंतिम दो वर्षों के दौरान की गई समीक्षा के आकलन के अनुसार पुस्तकालय अपने कार्यों / कार्यक्रमों के निष्पादन में सफल रहा है।

<u>मानव विज्ञान</u>

<u>इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई. जी. आर. एम. एस.), भोपाल</u>

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई. जी. आर. एम. एस.) संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है जो समय और स्थान में मनुष्य की कहानी को चित्रित करने के प्रति समर्पित है। आई. जी. आर. एम. एस. भारत में एक नए संग्रहालय अभियान का सृजन करने से जुड़ा है जो प्रयत्न के लिए मानव संस्कृतियों की वैधता और बहुलकता को प्रदर्शित करता है। आई. जी. आर. एम. एस. का मुख्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश में स्थित है जबकि इसका एक क्षेत्रीय केंद्र मैसून (कर्नाटक) में कार्य कर रहा है। आई. जी. आर. एम. एस. का तीन उपयोजनाओं नामत: (क) अवसंरचना विकास (संग्रहालय परिसर का विकास), (ख) शिक्षा और आउटरीच, और (ग) ऑपरेशन सॉल्वेज के साथ जारी व्यापक योजना के रूप में विकसित किया जा रहा है। अन्य शब्दों में आई. जी. आर. एम. एस. शिक्षा और आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक जीवन की एकता और विविधता का बचाव, परिरक्षण और संरक्षण करने के लिए अपनी भौतिक अवसंरचना का विकास करता है। अपने शिक्षा और आउटरीच कार्यक्रमों के तहत, संग्रहालय, पंजीकृत भागीदारों के लिए पारंपरिक कलाकारों को निमंत्रित करके, संग्रहालय विज्ञान, नृ-विज्ञान, कला, वास्तुकला, प्रागैतिहासिक और वैश्विक स्तर के वर्तमान मुद्दों के विषयों पर सेमिनार, संगोष्ठी और समूह-वार्ताओं के आयोजन करके प्रशिक्षण - सह - प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित करता है, ये आयोजन, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों के समारोह में किए जाते हैं। संग्रहालय, आम जनता में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जागरूकता के सुदृढ़ीकरण में भी संलग्न है, जिसके लिए यह विभिन्न राज्यों के कलाकारों को रंगमंच कला प्रस्तुतियों के आयोजन विभिन्न अन्य स्थानों पर करता है, जिससे एक सांस्कृतिक समझ का निर्माण किया जा सके। इस संबंध में आई. जी. आर. एम. एस., समाज के विभिन्न अंचलों में कलाकार शिविर, कार्यशाला, विशेष कार्यक्रम और

समारोह आयोजित करता है। वर्ष 2012 - 13 और 2013 - 14 की अवधि में अनेक नई प्रदर्शनियों जैसे - जैसे डोगरा और लिम्बू समूदायों के परम्परागत निवास तथा ओडिशा के तुआंग समुदाय की युवा डॉरमिटरी और अन्य प्रदर्शनियों का निर्माण किया गया और उन्हें जन जातीय प्रदर्शनी में संस्थापित किया गया, परम्परागत प्रौद्योगिकी और पौराणिक ट्राइल मुक्त वायु प्रदर्शनी भी लगाई गई। अपने परिसरों अन्य विशेष आवधिक प्रदर्शनियों के अलावा संग्रहालय ने विभिन्न महाविद्यालयों और स्कूलों में विरासत कॉर्नर्स का विकास भी जारी रखा। इसके द्वारा देश के विभिन्न भागों में अस्थायी और यात्रा प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया। 2012 - 13 के दौरान संग्रहालय ने 710 पौराणिक नमूने, 2400 डिजिटल मुद्रण, 250 घंटे से अधिक दृश्य - श्रव्य अभिलेख, 489 भारतीय / विदेशी जर्नल्स के खण्ड, पुश्रतकालय के संग्रह में 192 पुस्तकें और जोडी़ गई। वर्ष 2013 - 14 के दौरान संग्रहालय ने लगभग 1056 नृवंश विज्ञान के नमूने, 18400 डिजिटल प्रिंट्स, 518 भारत / विदेश के जर्नल्स तथा 748 पुस्तकों को संग्रह में शामिल किया है। मंत्रालय सतत् रूप से इसके कार्यों की समीक्षा कर रहा है और आर. जी. आर. एम. एस. के निष्पादन को इस संगठन की स्थापना के उद्देश्यों के अनुरूप पाया।

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन विकास संस्थान

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन के विकास हेतु संस्कृति मंत्रालय के तीन स्वायत्त संस्थान नामत: केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह, केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी और नव नालंदा महाविहार, बिहार और हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन, दाहुंग हैं। ये संस्थान अपने शैक्षिक, अनुसंधान कार्यक्रमों तथा अन्य सम्बद्ध कार्यकलापों / कार्यक्रमों के माध्यम से बौद्ध / तिब्बती तथा पाली अध्ययनों के विकास को बढ़ावा देते हैं।

केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सी. आई. बी. एस.), लेह

यह संस्थान लद्दाख, जो मूलत: बौद्ध स्थल भी है, में बौद्ध संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लद्दाख का क्षेद्ध तीन और पाकिस्तान की सीमाओं से लगता है और इसीलिए यह न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु संवेदनशील भी है। सी. आई. बी. एस. का मुख्य उद्देश्य आधुनिक विषयों की जानकारी के साथ बौद्ध विचारो, साहित्य तथा कलाओं की जानकारी दे कर विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना है। संस्थान का मुख्य बल भोती (तिब्बती) भाषा में बौद्ध दर्शन पढ़ाने का है, तथापि, विद्यार्थियों के ज्ञान क्षितिज को बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य विषय जैसे - हिंदी, अंग्रजी, सामान्य विज्ञान, समाजिक अध्ययन, गणित,

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा इतिहास भी पढ़ाए जाते हैं। इसके अलावा, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए आमची (भोत चिकित्सा), तिब्बती स्क्रेल पेंटिंग, मूर्तिकला और नक्काशी में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए छह वर्षीय पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। संस्थान का पुस्तकालय भोति, संस्कृत, पाली आदि भाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में 28,500 पुस्तकों के संग्रह के साथ पूरे बौद्ध हिमालयी क्षेत्र में एक सर्वोत्तम पुस्तकालय है। चारदीवारी, पहुंच और आंतरिक सड़क, अकादमिक भवन पुस्तकालय भवन, प्रशासनिक खण्ड, 100 छोत्रों की क्षमता वाले तीन हॉस्टल, क्रीड़ा स्थल तथा प्रवेश द्वार के निर्माण कार्य को पहले ही पूरा किया जा चुका है। सभागर का निर्माण कार्य तथा स्थल विकास कार्य प्रगति पर है। इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने के अतिरिक्त यह संस्थान सोवा रिग्या (भोत चिकित्सा) में पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान सी. आई. बी. एस. ने 1914 छात्रों को आधुनिक शिक्षा देने के साथ सांस्कृतिक शिक्षा भी प्रदान की। मौत चिकित्सा विज्ञान, परम्परागत मूर्ति कला, चित्र कला और लकड़ी पर खुदाई के क्षेत्र में लगभग 800 पुस्तकें तथा 65 जर्नल्स / पत्रिकाएं पुस्तकालय संग्रह के लिए प्राप्त की गई। सी. आई. बी. एस. ने बौद्ध दर्शन पाठें के हिंदी अनुवाद के लिए परियोजनाएं शुरू की तथा हिमालयी बौद्ध संस्कृति के इन साइक्लोपीडिया के समेकन का कार्य भी किया जो कि हिमालयी क्षेत्र की कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए स्रोत सामगी होगी। वर्ष 2013 - 14 के दौरान सी. आई. बी. एस. ने आचार्य, शास्त्री, मध्यमा, भोत चिकित्सा विज्ञान में 6 वर्षीय डिप्लोमा डिग्री की आधुनिक शिक्षा के साथ 1937 छात्रों को शिक्षा प्रदान की और साथ ही उन्हें सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करना जारी रखा। साथ में उन्हें परम्परागत मूर्ति कला चित्र कला और लकड़ी पर खुदाई का कार्य भी सिखाया गया। पुस्तकालय संग्रह में 478 पुस्तकें और 30 जर्नल्स / पत्रिकाएं खरीदी गई और शैक्षिक दौरे के लिए 48 वरिष्ठ छात्रों को शैक्षिक दौरे के लिए भेजा गया ताकि उन्हें देश की औद्योगिक ऐतिहासिक, धार्मिक और भौगोलिक सम्पन्नता से परिचित कराया जा सके। सी. आई. बी. एस. ने गोनपास / ननरी स्कूलों को मठ संबंधी शिक्षा प्रदान करना जारी रखा। सी. आई. बी. एस. एवं डी. पी. एस. जनस्कार के लिए भौतिक अवसंरचना और निर्माण कार्य रिपोर्टाधीन अवधि में जारी रखे गए। मंत्रालय द्वारा सी. आई. बी. एस. के कार्यों की समीक्षा समय - समय पर की जाती रही है और पाया गया कि संस्थान बौद्ध संस्कृति एवं अध्ययन को बढ़ावा देने में पर्याप्त योगदान दे रहा है।

<u>केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी. यू. टी. एस.) सारनाथ, वाराणसी</u>

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन के रूप में कार्य करने वाले केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी. यू. टी. एस.) सारनाथ, वाराणसी को तिब्बती संस्कृति के परिरक्षण के लिए एक केंद्रीय संगठन के रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

1967 में स्थापित किया गया था। आरंभ में इसने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के घटक विंग के रूप में कार्य किया और वर्ष 1977 में यह स्वायत्तशासी संगठन बना। बाद में 5 अप्रैल, 1988 को इसे मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। अब यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित एक स्वायत्तशासी संगठन है। तिब्बती संस्कृति और तिब्बती भाषा में संरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान और साहित्य, जिसका मूल लुप्त हो गया है, का परिरक्षण करना, भारतीय हिमालय सीमा क्षेत्र के उन छात्रों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना जिन्होंने पहले तिब्बत में उच्चतर शिक्षा प्राप्त की है और तिब्बती अध्ययन में उपाधियां प्रदान करने के प्रावधान के साथ शिक्षा के कार्य क्षेत्र को सम्पादित करना इसके लक्ष्य हैं। अपने उद्देश्यों के अनुसरण में, अध्ययन के सम्बद्ध पाठ्यक्रम, लिखित परीक्षा और उपाधि प्रदान करने से मिलकर बने आधुनिक विश्वविद्यालयों के ढांचे के भीतर पारंपरिक तिब्बती शिक्षण पद्धतियों के प्रति झुकाव के साथ तिब्बती अध्ययन में यह विश्वविद्यालय विगत 44 वर्षों से शिक्षा प्रदान कर रहा है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान विश्वविद्यालय के तकनीकी शब्दकोशों और इन-साइक्लोपीडिया के समेकन का कार्य जारी रखा। इसके द्वारा आयुर्वेद कोश - 5700 शब्दों की प्रविष्टि कर समेकित किय गया तथा तिब्बति - संस्कृत ज्योतिष के 3235 शब्दों, विश्वकोश के 3000 शब्दों जर्नल्स, ई - प्रलेखन और कुछ उपस्कर एवं 10 पुस्तकों का प्रकाशन वर्ष के दौरान किया गया। बौद्ध - पाठ अनुसंधान एकक की देखरेख में वार्षिक जर्नल प्रकाशित किया गया, 1 कार्यशाला भी आयोजित की गई। इसके अलावा 26 अध्यायों का संपादन किया गया और पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण भी कराया गया। विश्वविद्यालय ने ग्रंथ के 1140 पृष्ठों को तिब्बती - संस्कृत में अनुवाद कर पुन:स्थापित किया गया। दरभंगा संस्थान के महायान बौद्ध श्रृंखला संस्कृत पाठों के पुन:संपादन का कार्य प्रगति पर चल रहा है। विश्व विद्यालय आई. जी. एन. ओ. यू., नई दिल्ली के साथ मिलकर दुरस्त शिक्षा कार्यक्रम भी चला रहा है। 2013 - 14 के दौरान कट्स ने इनसाइक्लोपेडिक और तकनीकी शब्दकोश के समेकन का कार्य जारी रखा, जिसके तहत तिब्बती, संस्कृत, आयुर्विज्ञान शब्द कोश, तिब्बतन - संस्कृत, ज्योतिष कोश, विनय कोश आदि इसके द्वारा 2800 पुस्तकें - जर्नल्स, ई-प्रलेखन और कुछ उपस्कर भी खरीदे गए। उपर्युक्त के अलावा वर्ष के दौरान 6 पुस्तकें भी खरीदी गई। विश्व विद्यालय के द्वारा भाषा प्रयोगशाला भी स्थापित की गई तिब्बती - संस्कृत ग्रंथ के 850 पृष्ठों का अनुवाद कार्य कर उन्हें पुनर्स्थापित किया गया। मंत्रालय द्वारा संस्थान के कार्यकलापों की समय - समय पर समीक्षा की गई है और पाया गया है कि यह संस्थान ठीक प्रकार से कार्य कर रहा है।

<u>नव नालंदा महाविहार, बिहार</u>

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

नव नालंदा महाविहार (एन. एन. एम.) को बिहार सरकार द्वारा पाली और बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान के एक केंद्र के रूप में 20 नवम्बर, 1951 को स्थापित किया गया था। प्राचीन नालंदा महाविहार की तर्ज पर पाली और बौद्ध धर्म में उच्चतर शिक्षा के केंद्र को विकसित करना महाविहार की स्थापना के पीछे प्रेरणा रही। संस्कृति विभाग, एम. एच. आर. डी., भारत सरकार ने वर्ष 1994 में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में इस महाविहार को अपने प्रशासनिक नियंत्रण में ले लिया। 13 नवंबर, 2006 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नव नालंदा महाविहार को मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। एन. एन. एम. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उच्च स्तर के पाली और बौद्ध अध्ययन पर आधारित नवोन्मेषी शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल अपने विद्यार्थियों में सामाजिक और व्यापारिक कौशलों का विकास करता है बल्कि यह इनमें मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक श्रेष्ठता पैदा करता है। वर्ष 2011 - 12 के दौरान, एन. एन. एम. की लाइब्रेरी में 1000 पुस्तकें शामिल की गई। महाविहार द्वारा अनेक कार्यशालाओं, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन, सामाजिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में किया। वर्ष 2012 - 13 के दौरान 100 बिस्तर वाले छात्रावासों के निर्माण कार्य के लिए परियोजना की पहल सी. पी. डब्ल्यू. डी. के माध्यम से की गई ताकि विदेशी छात्रों के आवास की व्यवस्था की जा सकें। पाली, बौद्ध, दर्शन, प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर लगभग 1000 पुस्तकें रिपोर्टाधीन अवधि में खरीदी गई। श्रृंखलात्मक कार्यशालाओं के अलावा भाषा विज्ञान, सामाजिक दार्शनिक परिपेक्ष में 1 राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन भी किया गया। जूयान जैंग के जीवन के बारे में विभिन्न चित्र एवं भित्ति चित्र जूयान - जैंग हॉल के विकास के लिए खरीदे गए। 2013 - 14 के दौरान जूयान - जैंग हॉल के नजदीक ली गई नई भूमि की चार दीवारी का निर्माण किया गया। इसके अलावा एन. एन. एम. के संकाय भवन के निर्माण का कार्य भी वर्ष के दौरान पूरा किया गया। बौद्ध दर्शन, प्राचीन इतिहास, संस्कृति और भाषा आदि पर अनेक पुस्तकें खरीदी गई ताकि पुस्तकालय का विकास और सुधार किया जा सके। इसके द्वारा अनेक कार्यशालाएं - सेमिनार और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम बौद्ध विचारों के प्रसार एवं विकास के लिए आयोजित किये गए। बौद्ध शिक्षाओं के प्रचार - प्रसार के लिए 1 प्रदर्शनी का संचालन एन. एन. एम. में रिपोर्टाधीन वर्ष में किया गया। जूयान - जैंग स्मारक हॉल के संग्रह को बढ़ाने के लिए विभिन्न चित्र, भित्ति चित्र जो जूयान - जैंग के जीवन से संबंधित थे खरीद कर लगाए गए। मंत्रालय द्वारा संस्थान के कार्यों की समीक्षा समय - समय पर की जाती रही है और समीक्षाधीन अवधि में संस्थान के कार्यों को दक्ष तरीके से संपन्न पाया गया है।

<u>केंद्रीय हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, दाहुंग, अरूणाचल प्रदेश</u>

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

यह संस्थान वर्ष 2010 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन आ गया। (1) भारतीय संस्कृति के संबंध में विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना और बौद्ध दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना, (2) आधुनिक शोध पद्धतियों तथा उन्नत अद्यतन प्रौद्योगिकी के ज्ञान का उपयोग करके शिक्षाशास्त्र पद्धतियों के साथ बौद्ध अध्ययन, भोटी भाषा तथा साहित्य और हिमालयी अध्ययन के क्षेत्रों में उच्च शिक्षण और अनुसंधान के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना (3) भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा हिमालयी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में सांस्कृतिक मूल्यों, पारिस्थितिक तथा प्राकृतिक संसाधनों के परिरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करना। तथा (4) आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं धारणीय विकास को सुगम बनाने के लिए पारंपरिक कला एवं शिल्प तथा आधुनिक तकनीकी कौशल पद्धतियों की शिक्षा प्रदान करना और राष्ट्रीय एकता के दायरे में रहते हुए नृ-जातीय अस्मिता का परिरक्षण करना इस संस्थान के मुख्य उद्देश्य हैं। इस संस्थान को मुख्य रूप से योजना शीर्ष के अंतर्गत पूर्वोत्तर कार्यकलापों के लिए आबंटित निधियों के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है। वर्ष 2012 – 13 के दौरान मुख्य परिसर में परिसर / स्थल के विकास का कार्य शुरू किया गया जिसमें मुख्य स्थल को समतल करना भी शामिल है। संस्थान ने जनजातीय समुदाय के छोत्रों की व्यावसायिक / कम्प्यूटर प्रशिक्षण के संबंध में जनजातीय उपयोजना के तहत लाभान्वित किया। इसने बौद्ध कला एवं संस्कृति के विकास एवं प्रसार के लिए कार्यक्रम जारी रखें। वर्ष 2013 – 14 के दौरान संस्थान ने अपने स्थल – विकास कार्यक्रमों और पुराने सी. आई. एच. एस. परिसर के अवसंरचना विकास एवं अनुरक्षण का कार्य जारी रखा। रिपोर्टाधीन अवधि में पी. डब्ल्यू. डी. बोमडीला के माध्यम से कम्प्यूटर / व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु विकास कार्य किए गए। संस्थान ने कम्प्यूटर / व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में पाठ्यक्रम शुरू करके जनजातीय छात्रों को लाभान्वित किया। इसने पूर्व में चल रहे अपने कार्यक्रमों को जारी रखा जिनमें शामिल हैं – बौद्ध अध्ययन के क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएं और उच्च शिक्षा, नई पाठ्य पुस्तकें खरीद कर पुस्तकालय का विकास, शिक्षण सहायता और प्रकाशन तथा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन आदि। मंत्रालय नियमित रूप से इसकी गतिविधियों और निष्पादन की समीक्षा करता रहा है।

<u>स्मारक / शताब्दी संस्थान / संगठन</u>

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रीय स्मारक है। इसकी स्थापना 18 सितंबर, 1984 को गांधी स्मृति समिति (1971 में स्थापित) और गांधी दर्शन अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी, राजघाट (1969 में स्थापित) को मिलाकर की गई थी। गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन के मुख्य उद्देश्यों में दोनों परिसर का परिरक्षण, अनुरक्षण तथा रख - रखाव ओर विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजित करके महात्मा गांधी के जीवन, उद्देश्य और विचारों का प्रसार करना शामिल है। जी. एस. डी. एस. सार्थक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में गांधीवादी मूल्यों के प्रसार को बहुत महत्व देती है। वर्ष 2012 - 13 के दौरान जी. एस. डी. एस. ने देश के विभिन्न भागों और गांधी स्मृति में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन बच्चो, युवाओं और महिलाओं के जीवन के बारे में महात्मा गांधी के संदेश के अनुकूलन के लिए आयोजित किये और विभिन्न शिविरों और कार्यशालाओं के माध्यम से सामाजिक सरोकार के मुद्दें भी उठाए गए। विकासात्मक गतिविधियों के रूप में गांधी जयंती, शहीदी दिवस, कस्तूरबा निर्वाण दिवस, विनोबा जयंती आदि पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, महिला सशक्तीकरण और महिला पर हिंसा के विरोध में लड़ाई के लिए देश के विभिन्न राज्यों में महिलाओं को शामिल करते हुए उनके साथ अपनी पहुंच दर्ज की। इस कार्यक्रम के माध्यम से समिति ने पूरे देश में लगभग 5000 महिलाओं से मुलाकात की, जी. एस. डी. एस. ने अनेक क्षमता निर्माण - कार्यक्रमों / व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन समीक्षाधीन अवधि में किया। वर्ष 2013 - 14 के दौरान देश के विभिन्न भागों और गांधी समिति ने महात्मा गांधी के जीवन के संदेश और सामाजिक सरोकार के संबंध में कार्यक्रम आयोजित किए। इस दौरान युवाओं और महिलाओं से संबंधित कार्यक्रम / प्रशिक्षण कार्यशालाएं विभिन्न सकारात्मक और जागृति कार्यक्रम के लिए देश के विभिन्न भागों में आयोजित किए। महात्मा गांधी के संदेशों जैसे सत्याग्रह और अहिंसा के लिए गांधी जी के सिद्धांतों को जनता के विभिन्न भागों में पहुंचाने के लिए अनेक संस्मारक कार्यक्रम गांधी जयंती, शहीदी दिवस, कस्तूरबा निर्वाण दिवस (सेवा युग) विनोबा जंयती आदि पर आयोजित किये गए। मंत्रालय द्वारा समय - समय पर जी. एस. डी. एस. के कार्यक्रम की समीक्षा की जाती रही है और उन्हें संतोषजनक पाया गया।

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (एन. एम. एम. एल.)

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय आधुनिक भारतीय इतिहास का एक प्रमुख अनुसंधान केंद्र है। एन. एम. एम. एल. पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन काल पर निजी वस्तुओं का एक संग्रहालय है। इसमें आधुनिक भारत और सम्बद्ध विषयों पर विशेष बल के साथ पुस्तकें,

परिणाम बजट 2014-15

अध्याय -VI

पत्रिकाएं, समाचार पत्र तथा फोटोग्राफ है और साथ ही इसमें ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा अभिलेखों की माइक्रोफिल्म तैयार करने का एक रेप्रोग्राफी प्रभाग, एक पाण्डुलिपि मिशन तथा एक मौखिक इतिहास प्रभाग और एक अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग है। यह संग्रहालय दृश्य संचार के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की जानकारी प्रदान करता है। एन. एम. एम. एल. ने भारत में राष्ट्रवाद सहित विभिन्न विषयों पर सेमिनार तथ व्याख्यान आयोजित किए। नेहरू स्मारक संग्राहालय एवं पुस्तकालय में देश और विदेशों से दर्शक आए। वर्ष 2012 – 13 के दौरान अध्येता विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्यरत थे अध्येताओं के निष्कर्ष और उनके द्वारा तेयार अनुसंधान पेपर को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करवाया गया। एन. एम. एम. एल. ने श्री सी. राजगोपालाचारी की चुनिंदा रचनाओं के प्रकाशन के लिए एक परियोजना शुरू की। इसके द्वारा प्रख्यात व्यक्तियों की यादों को स्मरण कर रिकार्ड किया, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ी है। पुस्तकालय ने पुस्तकों का प्रापण जारी रखा, जिसमें आधुनिक भारतीय इतिहास और संबंधित सामाजिक विज्ञानों पर लघु फिल्मों व फाटोग्राफ्स के अलावा संकेंद्रण किया गया। वर्ष 2013 – 14 के दौरान अध्येता इन तीन प्रचालनाधीन परियोजनाओं के तहत कार्य कर रहे थे, नामत: (1) आधुनिक भारतीय इतिहास और समकालीन अध्ययन (2) भारत के विकास की संभावनाएं (3) भारत और विश्व की अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में बदलती प्रवृत्तियों में पुस्तकालय ने विभिन्न पुस्तकों माइक्रोफिल्म और फोटोग्राफ्स की खरीद को जारी रखा। पुस्तकालय द्वारा स्टेट ऑफ आर्ट सुविधाएं उपलबध कराई हैं जैसे – डिजिटल सदस्यता, बेतार एल. ए. एन., उच्च और डिजिटल सामग्री के लिए कम्प्यूटर भण्डारण सुविधाएं तथा आधुनिक प्रौजेक्शन प्रणाली से समल सेमिनार कक्ष। इसके द्वारा ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में 20 ट्रांसक्रिप्ट्स को अंतिम रूप दिया। पुरानी कलाकृतियों को बदलते हुए, प्रदर्शन और सी. सी. टी. वी. कैमरे संस्थापित कर संग्रहालय को आधुनिक बनाया जा रहा है। एन. एम. एम. एल. ने तारामंडल के क्रमोन्नयन का कार्य भी शुरू कर दिया है, ताकि आगन्तुकों को आकर्षित किया जा सके। संस्थान के कार्यों की नियमित रूप से समीक्षा की जा रही है।

<u>मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता</u>

1993 में स्थापित मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित एक स्वायत्त संगठन हैफ यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों के अनुसंधान और प्रशिक्षण का एक केंद्र है, जिसमें 19वीं शताब्दी के मध्य से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आंदोलन का अध्ययन होता है। यह संस्थान आधुनिक भारत की धर्मनिरपेक्ष परम्पराओं तथा 19वीं शताब्दी की घटनाओं के संबंध में पुस्तकों, समाचार पत्रों, फोटोग्राफों तथा समाग्री, जो जनता को अध्ययन

और अनुसंधान के लिए उपलब्ध हैं, का एक पुस्तकालय चलाता है। 5 अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता स्थित मोलाना के पैतृक घर का नवीकरण किया गया है और वहां आजाद स्मरणीय संग्रहालय स्थापित किया गया है। मौलाना आजाद संग्रहालय स्मरणीय वस्तुओं, फोटोग्राफों तथा वृतचित्र फिल्मों का संग्रह रखता है। श्री विजय सिंह नाहर के संग्रह के संग्रहालय के लिए बहुत सी दुर्लभ पुस्तकों तथा जर्नलों को प्राप्त किया गया। फिल्म प्रभाग के वृतचित्रों को प्रदर्शित करने के माध्यम से विषय में रूचि को भी बढ़ाया गया। संस्थान ने हाल ही में स्मरणीय वस्तुओं के एक संग्रह को प्राप्त किया है जो कि मौलाना आजाद के भतीजे स्वर्गीय नरूद्दीन अहमद द्वारा एकत्रित किए गए उनके चाचा के साथ बिताए समय की यादों से संबंधित है। इस संग्रह में मौलाना आजाद की पुस्तकों, फोटोग्राफ तथा कपड़ों को प्राप्त करना शामिल है। अशरफ मिस्त्री लेन में मौजूदा संग्रह का संपूर्ण करने के लिए इस संग्रह को विशिष्ट नुरूद्दीन संग्रह के रूप में अर्जित किया गया है। वर्ष 2012 – 13 के दौरान एम. ए. के. ए. आई. ने 24 अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की जिसमें से 6 अनुसंधान परियोजनाएं पूर्वोत्तर से संबंधित थीं। 13 बाह्य परियोजनाएं जो संस्थान के उद्देश्यों पर आधारित थी, का कार्य प्रगति पर चल रहा हैं। उजबेकिस्तान, उलान, यूडीई, किरगिस्तान, कजाकिस्तान, नवोसिबीरस्क, वियतनाम, म्यांमार, यूनान और भारतीय मध्य एशिया फाउंडेशन और ग्लोबल इंडिया फाउंडेशन के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। अध्येता द्वारा आन्तरिक प्रस्तुतियां दी गई और राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर 20 सेमिनारों का आयोजन किया गया। 12 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। वर्ष 2013 – 14 के दौरान 26 पूर्णकालिक अध्येताओं ने पूर्वोत्तर सहित विभिन्न क्षेत्रों अनुसंधान कार्य किया। 6 अध्येताओं ने विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए कार्य किया है। राष्ट्रीय स्तर पर 7 और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 13 सेमिनार आयोजित किए गए। इस संस्थाना में 9 संस्थानों को सेमिनार आयोजित करने के लिए सहायता की। संस्थान द्वारा समीक्षाधीन अवधि में 15 जर्नल्स और 2 पुस्तकें प्रकाशित की। संग्रहालय के संग्रह में मौलाना आजाद की 44 कलाकृतियां शामिल कर उसमें इजाफा किया गया। संग्रहालय ने इसमें प्राचीन कृतियों को परिष्कृत करने का कार्य जारी रखा। मंत्रालय द्वारा संस्थान के कार्यों की समय – समय पर समीक्षा की गई और इन समीक्षाओं में पाया कि संस्थान विद्वानों, एकादमिशियन्स और सामान्य जन को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहा है।